प्रकाश-पुस्तक-माला की ३४वीं पुस्तक

संसार की
असभ्य जातियों की स्त्रियाँ

उनके आचार-विचार, रीति-रिवाज, रूपरंग, नखशिख, शृंगार, परिच्छादन, सुविधाएँ, असुविधाएँ, उत्सव-नृत्य, सामाजिक महत्व तथा अन्य आवश्यक बातें.

लेखक

विश्वम्भरनाथ शर्मा कौशिक

सम्पादक—हिन्दी मनोरञ्जन

प्रकाशक

शिवनारायण मिश्र, भिषग्रत्न

प्रकाश पुस्तकालय, कानपुर

२॥)

निवेदन

'संसार की स्त्रियाँ' के नाम से एक लेख-माला 'प्रभा' नामक मासिक पत्रिका में कई वर्ष तक निकलती रही थी। वह लेख-माला हिन्दी पाठकों को बहुत पसंद आई। हमारा विचार था कि उक्त लेख-माला में संसार के सब देशों पर लेख प्रकाशित करें – भारत के सम्बन्ध में तो एक लेख-माला अलग ही निकालने का विचार था और उसके लिए हमने तैयारी भी यथेष्ट करली थी – अर्थात् बहु-संख्यक चित्र एकत्र कर लिये थे; परन्तु खेद है कि 'प्रभा' का प्रकाशन कुछ काल के लिए स्थगित हो जाने के कारण हमारा यह विचार कार्य्य-रूप में परिणत न हो सका। प्रभा में निकालने के साथ ही साथ हमारा यह विचार भी था कि हम इस लेख-माला को पुस्तकाकार भी प्रकाशित करेंगे। अपने उस विचार के अनुसार तथा हिन्दी-प्रेमियों के अनुरोध से हम उस लेख-माला का कुछ अंश आज पुस्तक रूप में हिन्दी पाठकों के सन्मुख उपस्थित करते हैं। इस अंश में केवल असभ्य जातियों की स्त्रियों का ही वर्णन है, अतएव इसका नाम 'संसार की असभ्य जातियों की स्त्रियाँ' रक्खा है। आशा है पाठक हमारी इस योजना को पसंद करेंगे। यदि पाठकों ने इस पुस्तक का यथेष्ट आदर किया तो हम संसार के सब देशों पर इसी प्रकार की सचित्र और सुन्दर पुस्तकें छापकर प्रकाशित करते रहेंगे।

निवेदक—

शिवनारायण मिश्र।

प्रकाश-पुस्तक-माला की कुछ पुस्तकें।

पुस्तक		मूल्य
तिलक चित्रावली	..	१)
व्यङ्ग चित्रावली	..	१॥)
वन्दे मातरम् चित्राधार	..	२)
गोरा (रवीन्द्रनाथ टैगोर)	..	३)
घर बाहर ,,	..	१।)
मुक्तधारा ,,	..	॥=)
वलिदान (विक्टर ह्यूगो) सचित्र		२)
वज्राघात (आपटे)	..	२॥)
महाराज नन्दकुमार को फाँसी	..	२॥)
कृष्णार्जुन युद्ध	..	॥=)
उद्योगी पुरुष	..	।=)
साम्यवाद	..	।=)
राष्ट्रीय वीणा भाग १	..	॥=)
राष्ट्रीय वीणा भाग २	..	॥)
मेरे जेल के अनुभव	..	।=)
देवी जोन	..	।=)
रूस का राहु	..	।=)
रूस की राज्य क्रान्ति (सजिल्द)		२॥)
चीन की राज्य क्रान्ति (सजिल्द)		१॥)
सचित्र अकाली दर्शन	..	॥।)
टाल्सटाय के सिद्धान्त	..	१।)
सती सारंधा	..	॥=)
त्रिशूल तरङ्ग	..	॥=)
फ़िजी में भारतीय प्रतिज्ञा वद्ध कुली प्रथा	..	१)
एशिया निवासियों के प्रति यूरोपियनों का बर्ताव	..	।=)
सम्राट् अशोक	..	१)
भारतीय सम्पत्ति शास्त्र सजिल्द	..	५)
शिक्षा सुधार	..	॥)
फ़िजी द्वीप में मेरे २१ वर्ष	..	॥)
मेघनाद वध	..	॥।)
वहिष्कृत भारत	..	।)
सितार शिक्षक	..	।=)
बीसवीं सदी का महाभारत	..	॥।)
राजनीति प्रवेशिका	..	।=)
कृषक क्रन्दन	..	≡)
रानाडे की जीवनी	..	=)॥
सरोजिनी की जीवनी	..	।=)
हमारा भीषण ह्रास	..	।)
कुसुमाञ्जलि	..	=)
दादा भाई नौरोजी	..	=)॥
चम्पारन की जाँच	..	।-)
स्वराज्य पर सर रवीन्द्र	..	।)
स्वराज्य पर मालवीयजी	..	।)
राजयोग	..	।=)
आयर्लैंगड में होमरूल	..	॥)
आयर्लैंगड में मातृभाषा	..	।=)
कांग्रेस का इतिहास	...	॥-)
श्रीकृष्णचरित्र	...	।=)

विषय-सूची

मलाया प्रायद्वीप

फ़िलीपाइन द्वीप

मेडागास्कर

भूमिका

पालीनीशिया

न्यू ज़ीलैण्ड

मेलेनीशिया

चित्र-सूची

माइक्रोनीशिया

आस्ट्रेलिया

टारेस स्ट्रेट्स और न्यू गाइना

सगडा द्वीप तथा सैलीबीस

मलाया प्रायद्वीप

फ़िलीपाइन द्वीप

मेडागास्कर

फ़िजी की स्त्रियाँ टोकरी बना रही हैं.

संसार की असभ्य जातियों की स्त्रियाँ।

भूमिका

संसार में स्त्री का प्रभाव

स्त्री सदैव अबला के नाम से पुकारी जाती रही है। परन्तु अबला होते हुए भी स्त्री कितनी बलवान है यह बात प्राचीन तथा अर्वाचीन इतिहास देखने से ज्ञात हो सकती है। बड़े बड़े वीर पुरुष तथा योद्धा स्त्री के एक नयन बाण से विद्ध होकर कितने अशक्त हो जाते रहे हैं। इस अबला ने बड़े बड़े वीरों को परास्त किया है, बड़े बड़े विद्वानों तथा बुद्धिमानों को पागल बना दिया है, बड़े बड़े योगियों और तपस्वियों को भ्रष्ट कर दिया है। सभ्य से सभ्य

तथा जङ्गली से जङ्गली जाति में भी स्त्री सदैव ही पुरुषों की एक बहुत बड़ी कमज़ोरी रही है। बड़े बड़े कवियों ने स्त्री की प्रशंसा में अपनी प्रतिभा का अन्त कर दिया है। इसके प्रतिकूल पुरुषों ने स्त्रियों को बुरा कहने में भी कोई कसर नहीं उठा रक्खी। संसार में जितने दुर्गुण हैं वे सब स्त्रियों ही के मत्थे मढ़ दिये गये हैं। केवल सभ्य जातियों में ही नहीं वरन् असभ्य जातियों में भी स्त्री की प्रशंसा तथा बुराई की गई है। जङ्गली जातियों में भी जहाँ एक ओर स्त्रियों की प्रशंसा की जाती है वहीं दूसरी ओर उन्हें दुर्गुणों की खान कहा जाता है। परन्तु, इतना सब कुछ होते हुए भी अबला स्त्री अब भी पुरुषों पर अपना सिक्का पूर्ण रूप से जमाये हुए है—उसके बिना पुरुषों का कार्य एक क्षण भी नहीं चल सकता।

सौन्दर्य

सौन्दर्य की अभी तक कोई ऐसी व्यापक परिभाषा नहीं बनी है जो समस्त संसार पर समान रूप से लागू हो सके। हम जिसे सौन्दर्य समझते हैं दूसरे उसको असौन्दर्य मानते हैं। अधिक मोटा होना सभ्य जातियों में बदसूरती समझी जाती है, परन्तु न्यू ज़ीलैण्ड की सामोअन जाति, ईरानियों, तुर्कों, मूरों, अफ्रीका तथा अमेरिका की कुछ जङ्गली जातियों में मोटापा खूबसूरती का द्योतक है। कहीं गोल सिर सुन्दर समझा जाता है तो कहीं लम्बा और चपटा सिर सुन्दर माना जाता है। दक्षिणी अमेरिका में फूली हुई पिण्डलियाँ सुन्दर समझी जाती हैं, इसके लिए वे पिण्डलियों को बाँध बाँध कर मोटा कर देते हैं। अफ्रीका में जङ्गली जातियाँ कुचों को लम्बा बनाने की चेष्टा करती हैं, क्योंकि उनके यहाँ लम्बे कुच ही सुन्दर माने जाते हैं। पालीनीशिया में माताएँ अपने बालकों की नाक दाब दाब कर चपटी कर देती हैं। उनका कथन है कि बड़ी और पूर्णोन्नत नाक सुन्दरता को बिगाड़ देती है। चीन में अभी तक इतने छोटे पैर, जिससे कि स्त्री चल फिर भी न सके, सुन्दर माने जाते हैं। बड़ी बड़ी आँखें किसे सुन्दर नहीं प्रतीत होतीं;

परन्तु मङ्गोल जातियाँ छोटी आँखों में ही सौन्दर्य की पूर्ण छटा का दर्शन करती हैं। यूरोप वाले श्वेत वर्ण को सबसे सुन्दर वर्ण समझते हैं; परन्तु भारतीयों को वह श्वेत-कुष्ट सा दिखाई पड़ता है। भारतीयों का कथन है कि जब तक वर्ण में कुछ नमक न हो तब तक वह सुन्दर नहीं कहा जा सकता। इसी प्रकार जङ्गली जातियाँ अपने साँवले रङ्ग को ही सब से सुन्दर वर्ण मानती हैं। श्वेत रङ्ग को वे मुर्दे का रङ्ग समझती हैं। इसमें सन्देह नहीं कि वर्ण का सौन्दर्य के साथ बड़ा घनिष्ट सम्बन्ध है। एक ऐसी स्त्री जिसके अन्य सब नखशिख सुन्दर कहे जा सकते हैं केवल वर्ण काला होने से कुरूपा समझी जाती है। यदि उसका वर्ण गौर हो जाय; तो सुरूपा कही जाने लगे। इसी प्रकार यदि एक गौर वर्ण की स्त्री, जो अन्य दृष्टि में

आस्ट्रेलिया की स्त्री की प्रस्तर मूर्ति

पूर्ण सुन्दर समझी जाती है, यदि उसका वर्ण काला हो जाय तो अधिकांश की दृष्टि में बदसूरत हो जायगी। यह बात पृष्ठ ११ में दिये हुए चित्र से भली भाँति समझ में आ सकती है। यह एक आस्ट्रेलियन स्त्री की प्रस्तर मूर्त्ति है। इस स्त्री का रङ्ग काला है और असली सूरत में देखने पर यह बदसूरत दिखाई पड़ती है। परन्तु मूर्ति का रङ्ग श्वेत होने के कारण यह उतनी बदसूरत नहीं दिखाई पड़ती। केवल वर्ण बदल जाने से इसकी बदसूरती में काफ़ी कमी हो गई।

यूरोप के सौन्दर्य विशारदों का कथन है कि वर्ण से सौन्दर्य की अधिक वृद्धि अथवा हास नहीं होता। एक स्त्री जो अन्य प्रकार से सुन्दर कही जा सकती है केवल वर्ण काला होने से कुरूपा नहीं मानी जा सकती। इसी प्रकार एक गोरी स्त्री, जिसके नखशिख सुन्दर नहीं हैं, केवल इसीलिए सुन्दर नहीं मानी जा सकती कि वह गोरी है। इस बात में बहुत कुछ सत्यता है; परन्तु इस बात से भी इन्कार नहीं किया जा सकता कि केवल वर्ण से सौन्दर्य की बहुत कुछ वृद्धि तथा उसका बहुत कुछ हास हो जाता है। एक अत्यन्त सुन्दर स्त्री का मुख यदि काला कर दिया जाय तो उसकी सुन्दरता उतनी न रहेगी, उसका बहुत कुछ हास हो जायगा। इसी प्रकार यदि एक काली स्त्री, जिसके नख शिख सुन्दर हैं, गोरी हो जाय तो उसकी सुन्दरता पहले की अपेक्षा बहुत कुछ बढ़ जायगी। अतएव यह सिद्ध हो गया कि नख शिख की सुन्दरता के साथ वर्ण की सुन्दरता भी सौन्दर्य वृद्धि के लिए आवश्यक है।

शरीर को नाना प्रकार के अलङ्कारों से, रङ्गों से, तथा अन्य कृत्रिम उपायों से सुन्दर बनाना ही शृङ्गार का अभिप्राय है। शृङ्गार का आदर्श भी संसार में भिन्न भिन्न है। यूरोप तथा अमेरिका की स्त्रियाँ मुख पर श्वेत पाउडर मल कर गालों पर हलका गुलाबी रङ्ग का पाउडर लगाती हैं। ओठों को

शृंगार

यूनामा की स्त्री.
वक्षस्थल पर गुदना गुदाये हुए.

लाल रङ्ग से रँगती हैं। यूरोप में आँखों में सुर्मा अथवा काजल लगाने का रिवाज बिल्कुल नहीं है, परन्तु भारतवर्ष, ईरान तथा रूम में स्त्रियाँ आँखों में सुर्मा अथवा काजल लगाती हैं। इसी प्रकार हाथ पैरों में मेंहदी लगाने का रिवाज भी भारत, ईरान तथा रूम में पाया जाता है। अफ़्रीक़ा तथा आस्ट्रेलिया में जङ्गली जातियों की स्त्रियाँ अपने शरीर में अनेक प्रकार के रङ्ग पोतती हैं। लाल, पीला, श्वेत, काला तथा अन्य अनेक रङ्ग शरीर में, केवल सौन्दर्य वृद्धि की दृष्टि से पोते जाते हैं। शृङ्गार करने का रिवाज संसार की प्रत्येक जाति की स्त्रियों में पाया जाता है। सभ्य जाति की स्त्रियाँ, सोने, चाँदी, हीरे, मोती इत्यादि के अलङ्कार पहनती हैं। असभ्य जातियाँ लकड़ी, हड्डी, बाँस, घास फूस, ताँबा, पीतल, पोत इत्यादि के अलङ्कारों से अपना शरीर सुसज्जित करती हैं।

गुदना

जङ्गली जातियों में गुदना भी शृङ्गार का एक अङ्ग माना जाता है। केवल जङ्गली जातियों में ही नहीं, वरन सभ्य कहलाने वाली अनेक जातियाँ भी गुदना गुदवाती हैं। यूरोपियन स्त्रियाँ भी कभी कभी बाँहों अथवा भुजाओं में गुदना गुदवाती हैं। भारत में भी स्त्रियाँ ठोढ़ी तथा गाल पर तिल गुदवाती हैं। न्यू ज़ीलैण्ड की माओरी जाति की स्त्रियाँ अपनी समस्त ठोढ़ी गुदवा डालती हैं। ऐनू जाति की स्त्रियाँ अपने ऊपरी ओंठ पर ऐसा गुदना गुदवाती हैं जो बिल्कुल मूँछों की तरह दिखाई पड़ता है। यद्यपि बहुत सी दशाओं में गुदने से सौन्दर्य वृद्धि की अपेक्षा सौन्दर्य नाश हो जाता है; परन्तु सौन्दर्य का आदर्श और शृङ्गार का आदर्श भिन्न होने के कारण वह अच्छा समझा जाता है। अलजीरिया की स्त्रियाँ भी गुदना गुदवाती हैं। १५ वें पृष्ठ पर अलजीरियन स्त्री का चित्र है जो दोनों गालों तथा दोनों बाँहों पर गुदना गुदवाये हुए है। यह स्त्री अन्य दृष्टि से सुन्दर कही जा सकती है; परन्तु अधिक गुदना गुदाने के कारण, एक भारतीय की दृष्टि में उसका सौन्दर्य कुछ
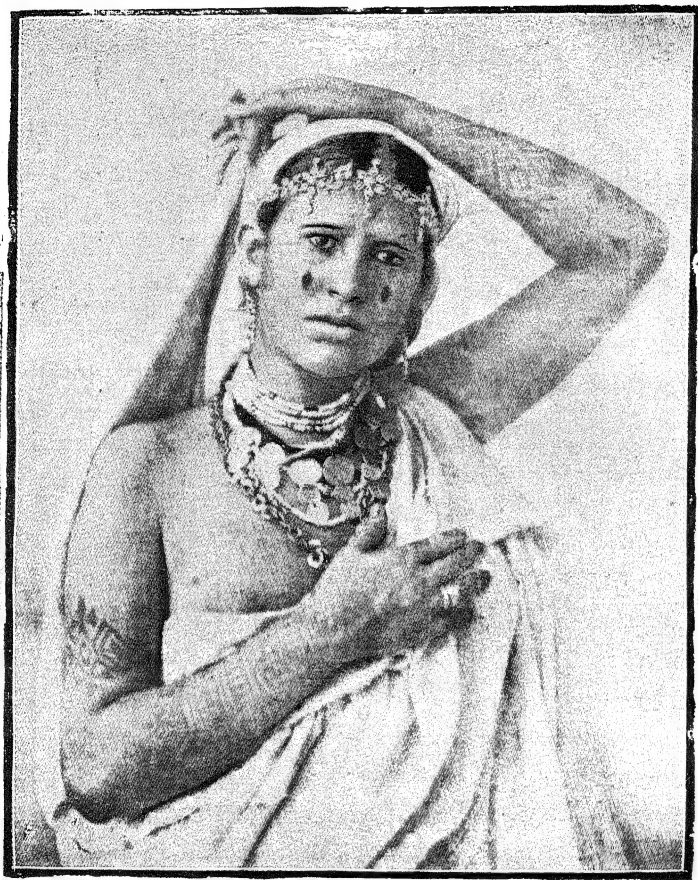
अलजारिया की स्त्री.

(मुख तथा बाहों पर गुदना गुदाये हुए.)

बिगड़ गया है; परन्तु यदि एक अलजीरियन से पूछा जाय तो वह यही कहेगा कि इससे स्त्री का सौन्दर्य बहुत कुछ बढ़ गया।

ऐसी जङ्गली जातियाँ, जिनका रङ्ग श्याम होता है, रँग का गुदना नहीं गुदवातीं; क्योंकि काले चमड़े में रङ्ग का गुदना दिखाई नहीं पड़ता। अतएव वे चमड़े को छील कर अथवा इस प्रकार दाग कर जिससे कि उतने स्थान का चमड़ा उभर आवे, गुदना गुदाती हैं। अफ्रीका की काङ्गो जाति में इस प्रकार के गुदने का बहुत रिवाज है। अन्यत्र काङ्गो फ्रीस्टेट की एक स्त्री का चित्र दिया गया है, इसकी छाती और पेट पर उभरा हुआ गुदना गुदा हुआ है।

संसार की अनेक जाति की स्त्रियों में अनेक प्रकार के गहने पहनने का रिवाज है। न्यू ज़ीलैण्ड में छोटे छोटे जीवित पक्षी कानों में लगाये जाते हैं। पेरिस की लेडियाँ अपनी कमर में जीवित कछुए लटकाती हैं। अलङ्कारों के लिए शरीर को बिगाड़ लेना प्रायः संसार की सभी स्त्रियों का स्वभाव है। भारत में स्त्रियाँ केवल गहने पहनने के लिए कानों की दुर्दशा कर डालती हैं। पूर्वी तथा मध्य अफ्रीका में स्त्रियाँ ऊपरी ओंठ को फाड़ कर उसमें गहना पहिनती हैं। उत्तर-पश्चिमी अमेरिका में नीचे का ओंठ फाड़ डाला जाता है और उसमें गहना पहना जाता है। दक्षिण अमेरिका में गाल केवल गहना पहनने के लिए फाड़ डाले जाते हैं। नाक में कील तथा नथ पहनने का रिवाज भारत में है, तातारी स्त्रियाँ भी नाक में नथ पहनती हैं। गले में हँसली, तौक़ तथा अन्य गहने भारत में खूब पहने जाते हैं। काङ्गो (अफ्रीका) की स्त्रियाँ गले में इतने बड़े तौक़ पहनती हैं कि एक एक तौक़ का वज़न १५ सेर तक का होता है। पूर्वी अफ्रीका में पैरों तथा बाँहों में लोहे के तार लपेटे जाते हैं। बर्मा की कुछ पहाड़ी जातियाँ गले में ऐसे गहने पहनती हैं जिस से उनकी गर्दनें असाधारण रूप से लम्बी हो जाती हैं।
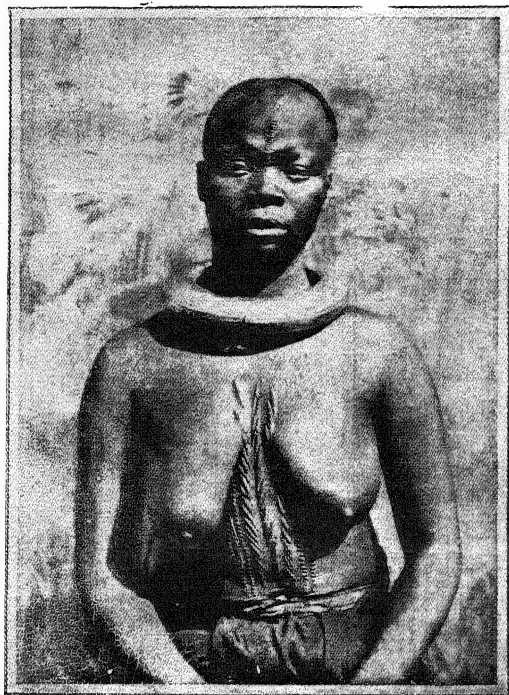
कांगो (अफ़्रीक़ा) की स्त्री
पेट पर उभरा हुआ गुदना गुदाये तथा गले में तौक़ पहने हुए.

यूरोप की सभ्य जातियाँ भी गले में गलेबन्द तथा हार पहनती हैं। कानों में रिङ्ग तथा हाथों में कड़े पहनती हैं। इस प्रकार संसार की कोई ऐसी जाति नहीं है जिसकी स्त्रियों को गहने से प्रेम न हो।

सिर के बालों को सजाने का ढङ्ग भी भिन्न भिन्न है। अनेक जातियों में तो बाल केवल सौन्दर्य वृद्धि के लिए सजाये जाते हैं, परन्तु कुछ जातियों में बालों का एक खास ढङ्ग से सजाना एक विशेष अर्थ रखता है। उदाहरणार्थ एरीज़ोना की होपी जाति में कुमारियाँ सिर के दोनों ओर बालों के दो फूल से बना लेती हैं, यह फूल इस बात के द्योतक होते हैं कि कन्या का अभी विवाह नहीं हुआ। विवाह होने के पश्चात् फिर कोई स्त्री बालों के फूल नहीं बना सकती। विवाह होने के पश्चात् वह मूली की शकल की अलकें बना कर दोनों कन्धों पर लटकाये रहती है।

दाँतों को काला करना, उन्हें रेतवा देना भी अनेक जातियों में सौन्दर्य वृद्धि का हेतु माना जाता है। मेलेनीशिया की अनेक जातियाँ पान खाकर अपने दाँत काले कर लेती हैं; क्योंकि दातों का श्वेत रहना उनमें बदसूरती समझा जाता है। इसी प्रकार अफ्रीका की काङ्गो जाति की स्त्रियाँ अपने दाँत रेतवा डालती हैं। बहुत सी जातियों में विवाह के समय सामने के एकाध दाँत तुड़वा दिये जाते हैं।

परिच्छादन

शृङ्गार के पश्चात् परिच्छादन का प्रश्न उठता है। संसार की अधिकांश जातियाँ वस्त्र पहनती हैं। वस्त्र पहनने का हेतु केवल शरीर छिपाना ही नहीं है वरन् शरीर की सौन्दर्य-वृद्धि करना भी है। केवल अङ्ग प्रत्यङ्ग को पुरुषों की दृष्टि से छिपाये रखने के विचार से स्त्रियाँ वस्त्र नहीं पहनतीं। यदि ऐसा होता तो बहुत सी जातियाँ, जिनमें किसी विशेष अङ्ग की लज्जा की जाती है और उसी को छिपाने की चेष्टा की जाती है, समस्त अङ्ग को वस्त्रों से न ढकतीं। उदाहरणार्थ मुसलमान स्त्रियाँ अधिकतर अपना मुख

पूर्वी अफ्रीका की स्त्री.
ओंठ में गहना पहने हुए.

परपुरुष को नहीं दिखातीं। यदि कोई परपुरुष किसी मुसलमान स्त्री को नङ्गी देख ले तो वह स्त्री सब से पहले अपना मुख छिपायगी, दूसरे अङ्ग प्रत्यङ्गों को छिपाने का ज़रा भी प्रयत्न न करेगी। चीनी स्त्रियाँ अपना सब अङ्ग पुरुष को दिखा देंगी, परन्तु पैर कभी न दिखावेंगी, पैर देखने का अधिकार पति ही को प्राप्त रहेगा। जापानियों में स्त्री-पुरुष एक स्थान पर नङ्गे नहाते हैं, स्त्रियाँ ऐसी दशा में भी पुरुष के सामने कोई लज्जा अनुभव नहीं करतीं। परन्तु यदि किसी स्त्री की नङ्गी तस्वीर कोई पुरुष देख ले तो वह स्त्री लज्जा से मर सी जाती है। इसी लिए जापान में स्त्री के नङ्गे चित्र बहुत कम बनाये जाते हैं। इसके प्रतिकूल यूरोप में स्त्री पुरुष के सामने नङ्गी नहीं हो सकती, परन्तु स्त्रियों के असंख्य नङ्गे चित्र बाज़ारों में खुले तौर पर बिकते हैं। यूरोपियन स्त्रियाँ ड्रार्स (छोटा पाजामा जो पेटी कोट के नीचे पहना जाता है) पहने हुए पुरुष के सामने कभी नहीं आ सकतीं-यद्यपि ड्रार्स से उनके सब अङ्ग ढके रहते हैं; परन्तु नाच में वे ऐसे महीन कपड़े पहनती हैं कि जिससे उनका समस्त शरीर नङ्गा दिखाई पड़ता रहता है। स्पेन की स्त्रियाँ किसी पुरुष को अपनी पिण्डलियाँ नहीं दिखातीं, पिण्डलियों के देखने का अधिकार केवल पति को रहता है—वैसे चाहे कोई पुरुष अन्य सब अङ्ग देख ले। जङ्गली जातियों में भी इसी प्रकार की प्रथाएँ हैं। उत्तर–पश्चिमी अमेरिका की स्त्री किसी भी पुरुष के सामने नङ्गी आ सकती है, पर यदि उसके ओंठ में उसका गहना न हो तो वह कभी पुरुष के सामने नहीं आवेगी। अफ़्रीक़ा की कुछ जातियों में यह प्रथा है कि प्रत्येक स्त्री अपनी कन्धनी में एक लकड़ी पीछे की ओर लटकाये रहती है, जिस स्त्री की कन्धनी में यह लकड़ी न लगी होगी वह कभी पुरुष के सामने नहीं आवेगी। जो जातियाँ बिल्कुल नग्न रहती हैं उनमें भी कोई न कोई चिन्ह ऐसा होता है जिसके बिना कोई स्त्री पुरुष के सामने नहीं आ सकती।

जल-वायु का प्रभाव भी परिच्छादन पर यथेष्ट पड़ता है। एक जर्मन विद्वान ने परिच्छादन को दो भागों में विभाजित किया है। एक तो शीत-प्रधान

तथा दूसरे उष्णता-प्रधान । उष्ण देशों में केवल कमर से लेकर पैरों अथवा घुटनों तक वस्त्र पहनने की आवश्यकता पड़ती है । यही कारण है कि भूमध्य रेखा के आस पास जितने देश हैं उनके निवासी केवल गुप्ताङ्गों को छिपाने के लिए कमर से लेकर घुटनों तक कपड़ा पहनते हैं। क्योंकि, उन्हें अधिक वस्त्र पहनने की कोई आवश्यकता महसूस नहीं होती । जिन जङ्गली जातियों में गुप्ताङ्गों को छिपाने की भावना विद्यमान नहीं है वे जातियाँ नग्न तक रहती हैं ।

कांगो की स्त्रियाँ.
मुख पर गुदना गुदाये तथा दाँत रेतवाये हुए.

इसके प्रतिकूल शीत-प्रधान देशों में कपड़ा पहनना अनिवार्य है। बिना कपड़े पहने वहाँ कोई जीवित नहीं रह सकता। यही कारण है कि शीत-प्रधान देशों की जङ्गली जातियों में यद्यपि लज्जा का भाव इतना नहीं होता कि वे अपने गुप्ताङ्गों को छिपाना अपना पहला कर्तव्य समझें, परन्तु तौ भी उन्हें, केवल शीत बचाने के लिए, वस्त्र पहनने पड़ते हैं।

परन्तु एक बार लज्जा का भाव उत्पन्न हो जाने पर फिर बिना आवश्यकता भी वस्त्र पहनने पड़ते हैं। उदाहरणार्थ यूरोपियन जाति के लोग ऐसे गर्म देशों में जाकर भी; जहाँ वस्त्र पहनने की कोई आवश्यकता नहीं पड़ती, उतने ही वस्त्र पहनते हैं जितने कि वे यूरोप में पहनते हैं। इसी प्रकार अरब के निवासी नीचे से ऊपर तक अपने शरीर को वस्त्रों से ढके रहते हैं—यद्यपि अरब एक ऐसा गर्म देश है जहाँ बहुत कम कपड़े पहनने की आवश्यकता पड़ती है।

सभ्य जातियों में वस्त्र न केवल शरीर को छिपाने के लिए पहने जाते हैं और न केवल शीत से बचने के लिए—वरन् शरीर का सौन्दर्य बढ़ाने के लिए भी पहने जाते हैं। यही कारण है कि सभ्य जातियों में नित्य नये फ़ेशन और नई काट छाँट के वस्त्र बनते रहते हैं। अतएव यह सिद्ध हुआ कि सभ्य जातियों में वस्त्र पहनने के मुख्य दो अभिप्राय होते हैं—एक तो शरीर को छिपाना और दूसरे सौन्दर्य-वृद्धि करना। जङ्गली जातियों में भी मुख्य कारण दो ही हैं—एक तो शरीर को छिपाना, दूसरा शीत से बचना। असभ्य जातियों में वस्त्र बहुत कम, केवल यथाआवश्यकता, पहने जाते हैं। यह बात पाठकों पर प्रस्तुत पुस्तक पढ़ने से भली भाँति विदित हो जावेगी। इसका कारण यही है कि एक तो असभ्य जातियों में शरीर को छिपाने की भावना उतनी प्रबल नहीं होती जितनी कि सभ्य जातियों में होती है, दूसरे वस्त्रों द्वारा सौन्दर्य-वृद्धि करने की कला वे बिल्कुल नहीं जानतीं। हाँ, अब यूरोपियन तथा अमेरिकन मिशनरियों की कृपा से उन्हें वस्त्रों का महत्व

क्रमशः ज्ञात होता जा रहा है। अतएव अब उन्हों ने वस्त्र पहनने आरम्भ कर दिये हैं।

असभ्य जातियों की विवाह प्रथाएँ भी भिन्न भिन्न हैं। कहीं कन्या हरण होता है, कहीं कन्या स्वयम् ही वर को चुनती है, कहीं विवाह करने का समस्त भार केवल माता पिता पर होता है। कुछ जातियों को छोड़ कर अधिकांश जातियों में कन्या तथा वर को विवाह के पहले परस्पर मिलने जुलने की पूर्ण स्वाधीनता प्राप्त रहती है।

विवाह प्रथा

जिन असभ्य जातियों में कन्या स्वयम् वर को पसन्द करके विवाह करती है, उनमें यह प्रथा है कि वर को कोई वीरता का काम करके कन्या की दृष्टि में अपने को वीर प्रमाणित करना पड़ता है। ये वीरता के

आस्ट्रेलियन स्त्रियों का द्वन्द-युद्ध

काम या तो किसी शत्रु को परास्त करना, किसी भयानक जन्तु का शिकार करना अथवा अन्य इसी प्रकार के कार्य करके दिखलाना होते हैं। जिन जातियों में शत्रुओं की खोपड़ियाँ एकत्र करने की प्रथा है, उनमें कन्या उसी युवक को पसन्द करती है, जिसके पास खोपड़ियों की संख्या अधिक होती है।

मलाया प्रायद्वीप की कुछ असभ्य जातियों में यह प्रथा है कि कन्या भागती है और विवाह की इच्छा रखने वाला युवक उसको पकड़ने दौड़ता है। यदि युवक कन्या को पकड़ लेता है तब तो उसके साथ कन्या का विवाह हो जाता है अन्यथा वह उस कन्या के योग्य नहीं समझा जाता। कुछ जातियों में विवाह केवल धन-बल द्वारा होता है। इन जातियों में कन्या-विक्रय की प्रथा के अनुसार विवाह किया जाता है। जो युवक अधिक रुपये दे सकता है, उसी का विवाह होता है। ऐसी जातियों में दरिद्र युवक आजन्म अविवाहित ही रहते हैं।

विवाह के समय खुशी मनाना प्रायः सभी असभ्य जातियों में पाया जाता है। सभ्य जातियों की तरह असभ्य जातियों में भी विवाह के समय बड़े बड़े भोज दिये जाते हैं, नाच गान भी खूब होता है।

जहाँ स्त्रियों की अधिकता है वहाँ एक पुरुष अनेक विवाह कर डालते हैं; परन्तु जहाँ स्त्रियों की कमी है वहाँ एक स्त्री अनेक पुरुषों की पत्नी बनकर रहती है। जहाँ एक स्त्री के अनेक पति होते हैं वहाँ बहुधा स्त्रियों में सौतियाडाह होने के कारण परस्पर लड़ाई झगड़े होते रहते हैं। आस्ट्रेलिया तथा पेसिफ़िक महासागर के कुछ अन्य छोटे छोटे द्वीपों में सौतों में परस्पर केवल मौखिक वादविवाद ही नहीं होता वरन् खुले रूप से द्वंद-युद्ध होता है—जिसे सैकड़ों स्त्री-पुरुष देखते हैं। इस द्वंद-युद्ध में जो स्त्री विजय प्राप्त करती है वह आदर तथा सम्मान की दृष्टि से देखी जाती है और जो हारती है वह अपने पति तथा समाज की दृष्टि से गिर जाती है।
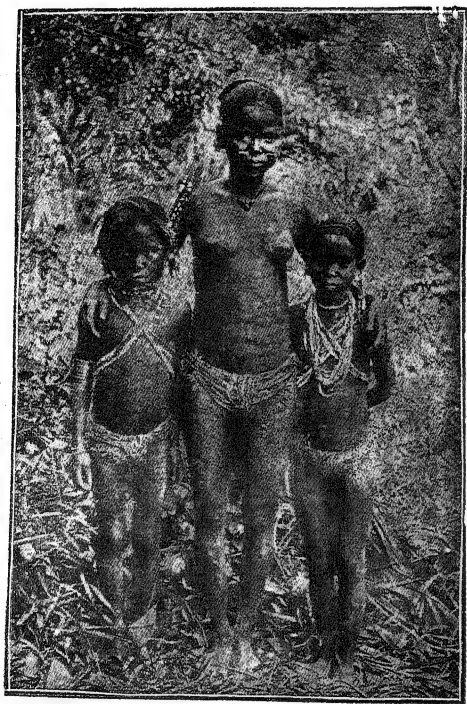
मलाया प्रायद्वीप की साकाई युवती.
नाक में लकड़ी पहने हुए.

असभ्य जातियों का कोई विशेष धर्म्म नहीं है। सर्व शक्तिमान ईश्वर की कल्पना करना उनके लिए असम्भव है। वे केवल उन चीज़ों को पूजते हैं जो उनसे अधिक बलवान हैं और जो उन्हें हानि पहुँचा सकती हैं। उनमें पूजा का भाव केवल यह है कि जो चीज़ें उन्हें हानि पहुँचा सकती हैं उन्हें इस प्रकार सन्तुष्ट तथा प्रसन्न रखना कि वे हानि पहुँचाने का कभी इरादा भी न कर सकें। अतएव उनकी पूज्य वस्तुएँ साँप, भूत-प्रेत तथा भयानक आकार-प्रकार के कुछ काल्पनिक मनुष्य होते हैं। अधिकतर अपने मृत पुरुषों की मूर्तियाँ, खोपड़ियाँ तथा प्रेतात्माओं को ये लोग पूजते हैं। अथवा, यदि उनकी जाति में पहले

धर्म्म
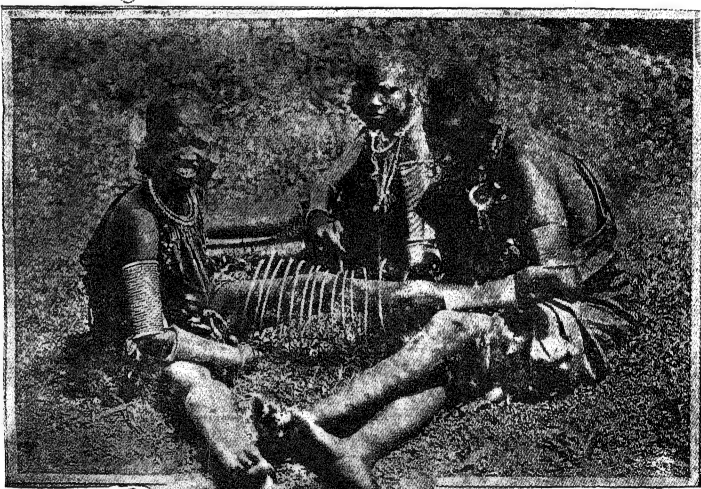
पूर्वी अफ़्रीक़ा की मसाई स्त्रियाँ.
पैरों में लोहे के तार पहने हुए.

कभी कोई बड़ा प्रतापी तथा बलशाली राजा अथवा मुखिया हो गया है तो उसकी मूर्ति बना कर रखते हैं और उसको पूजते हैं। टोना-टोटका मन्त्र जन्त्र का असभ्य जातियों में बहुत प्रचार है। यह भी उनके धर्म का एक महत्व पूर्ण अङ्ग है और जो व्यक्ति इसे जानता है वही उनका पुरोहित तथा गुरू समझा जाता है। रोग को ये लोग प्रायः जन्त्र मन्त्र से ही दूर करने की चेष्टा करते हैं और जहाँ तक देखा गया है इसमें उन्हें सफलता भी मिलती है। जन्त्र मन्त्र पर इन जातियों का इतना विश्वास होता है कि उसके आगे औषध का ये लोग कोई मूल्य ही नहीं समझते। अनेक जातियों

एरीज़ोना की होपी कुमारी.
सिर के दोनों ओर बालों के गुच्छे अविवाहित होने का चिन्ह हैं.

में जन्त्र मन्त्र विद्या की जानने वाली स्त्रियाँ ही होती हैं। ऐसी स्त्रियों का बड़ा मान तथा प्रतिष्ठा होती है।

स्त्रियों का महत्व

अधिकांश असभ्य जातियों में स्त्रियाँ केवल कामोत्तेजना को तृप्त करने तथा पुरुषों की सेवा करने के लिए होती हैं। कुछ जातियों में, जिन में स्त्रियों की संख्या अधिक है, स्त्रियाँ एक पालतू पशु की तरह समझी जाती हैं। घर का सब काम काज उन्हें करना पड़ता है; पति की सेवा करनी पड़ती है, परन्तु उन्हें न अच्छा खाना मिलता है न अच्छा कपड़ा। पुरुष दिन भर

एरीज़ोना की स्त्री.
मूली के आकार की अलकें विवाहित होने का चिन्ह हैं.
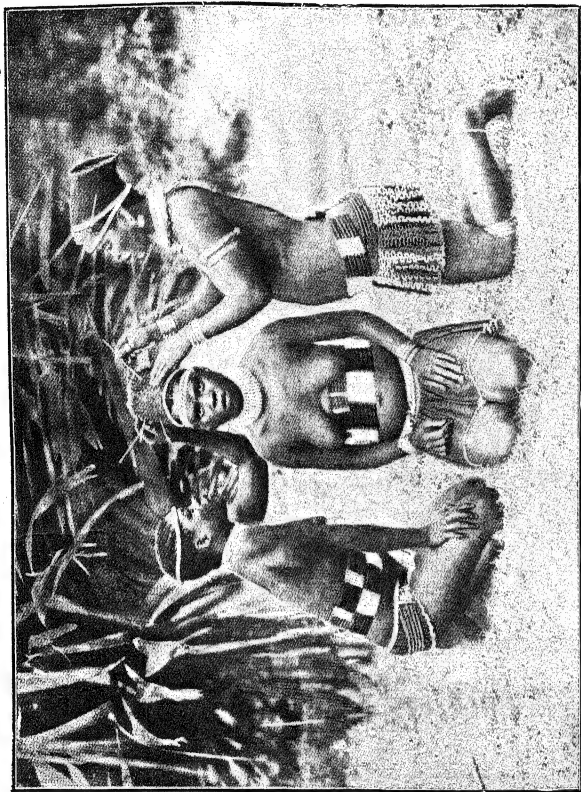
ज़ूलू जाति (अफ़्रीक़ा) की स्त्रियाँ.
पूर्ण शृंगार किये हुए.

प्राय: समस्त सभ्य कहलाने वाली जातियाँ स्त्री को पुरुष की अपेक्षा निकृष्ट प्राणी मानती हैं। परन्तु; सभ्य जातियों में स्त्रियों को अधिक सुख मिलता है—असभ्य जातियों में उन्हें इतना सुख नहीं मिलता।

इस पुस्तक के पढ़ने से पाठकों को असभ्य जाति की स्त्रियों के सम्बन्ध में प्राय: सभी ज्ञातव्य बातें मालूम होजायँगी। उनके रूपरंग, नखशिख, शृङ्गार तथा परिच्छादन, आचार-विचार, उनकी सुविधायें, असुविधायें, उनका सामाजिक महत्व इत्यादि इत्यादि सभी बातें ज्ञात होजायँगी।

इस पुस्तक की सामग्री अँग्रेज़ी पुस्तकों से ली गई है। अँग्रेज़ी में इस विषय पर अनेक पुस्तकें हैं; पर खेद है कि हिन्दी में इस विषय पर अभी तक एक भी पुस्तक नहीं थी। आशा है इस पुस्तक से हिन्दी की यह कमी कुछ अंशों में पूरी होजायगी।

पालीनीशिया

१

भौगोलिक स्थिति, शारीरिक बनावट, सौन्दर्य्य उसकी प्राप्ति तथा रक्षा, शारीरिक विकृति और गुदना, परिच्छादन, टापा और उसका निर्माण, चटाई के वस्त्र, शृंगार, जन्म तथा बाल्यकाल, बालहत्या.

भौगोलिक स्थिति

पालीनीशिया अनेक द्वीपों के समूह का नाम है। यूनानी भाषा में 'पाली' के अर्थ बहुत और 'नीशिया' के अर्थ द्वीप के होते हैं। आस्ट्रेलिया के पश्चिम पैसेफिक महासागर में कुछ द्वीपों का समूह पालीनीशिया के नाम से प्रसिद्ध है। यदि न्यूज़ीलैण्ड से पैसेफिक को पार करते हुए फ़िजी और हवाई के मध्य एक लकीर खींची जाय तो वह पालीनीशिया को इस प्रकार काटेगी कि पूर्व में माइक्रोनीशिया और पश्चिम में मैलेनीशिया पड़े। पालीनीशिया के सब द्वीपों का क्षेत्रफल इस प्रकार है कि उनमें जितने द्वीप हैं यदि उन सबको लिया जाय तो उनका व्यास एक हज़ार मील का होगा। पालीनीशिया के मुख्य द्वीप ये हैं:—टांगा अथवा फ्रैण्डली, सामोआ, हर्वी अथवा कुक, सोसाइटी द्वीप जिसमें कि ताहीती भी सम्मिलित है तथा हवाई द्वीप जिसे कैप्टन कुक ने सैण्डविच द्वीप का नाम दिया है। ये सब द्वीप फ़िजी के पूर्व में स्थित हैं। इनमें से कुछ तो भली भाँति आबाद हैं और कुछ बिल्कुल उजाड़ पड़े हुए हैं। इन सब द्वीपों में पालीनीशियन जाति के लोग रहते हैं और सब एक भाषा बोलते हैं।
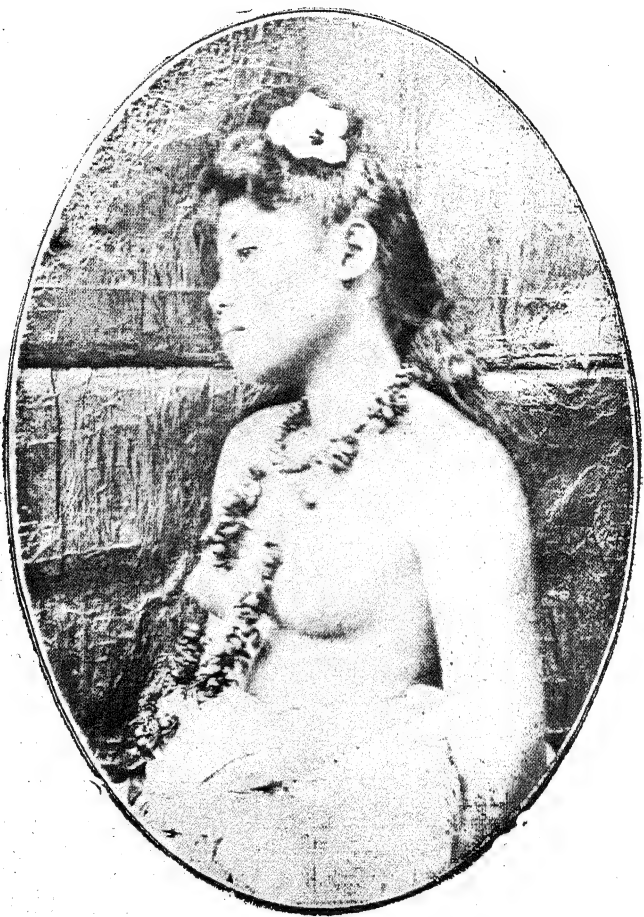
सामोआ द्वीप की स्त्री.

इसके बालों में लगा हुआ फूल इसकी सौन्दर्योपासना का चिन्ह है.

इस जाति के लोग क़द में लम्बे और हाथ पैर के सुदृढ़ होते हैं। इनके बाल काले अथवा गहरे बादामी रंग के होते हैं। इनमें से कुछ के बाल तो सीधे होते हैं और कुछ के घुंघराले। इनके शरीर का रंग बादामी मिश्रित पीत होता है। नाक सीधी और कुछ बड़ी होती है। यात्रियों ने इस जाति को एक सुन्दर जाति माना है। इस जाति का शरीर बिल्कुल सीधा होता है और इनकी चाल में एक ऐसी विशेषता है जो संसार की किसी अन्य जाति की चाल में बहुत कम पाई जाती है। इस जाति की स्त्रियां यूरोपियन यात्रियों तक की दृष्टि को सुन्दर प्रतीत होती हैं। इन स्त्रियों के सम्बन्ध में मिसेस बिशप का कथन है– "स्त्रियों की चाल एक विचित्र प्रकार की होती है और नेत्रों को बड़ी भली मालूम होती है। मैं इस जाति की स्त्री को केवल उसकी चाल से बता सकती हूँ। इन स्त्रियों की चाल के सामने यूरोपियन स्त्रियों की चाल बड़ी भद्दी प्रतीत होती है।" एक दूसरे यात्री का कथन है– "टांगा जाति की स्त्रियों की चाल ऐसी होती है कि मानो वे हवा में तैर रही हैं। उनका वक्षस्थल मनोहर होता है। सबसे आश्चर्य की बात यह है कि बुढ़ापे में भी इन स्त्रियों की शारीरिक बनावट नहीं बिगड़ती।"

शारीरिक बनावट

पालीनीशियन बड़े सौन्दर्योपासक होते हैं। स्त्रियां अपने सौन्दर्य को बढ़ाना और उसे बुढ़ापे तक रखना भली भांति जानती हैं। ये लोग बड़े स्नान प्रेमी होते हैं। ये लोग नित्य स्नान करते हैं। स्नान सदा मीठे पानी में करते हैं। यदि कभी समुद्र के खारी पानी में स्नान करते भी हैं तो उसके पश्चात् एक बार मीठे पानी से अवश्य नहाते हैं। साबुन के स्थान में ये लोग एक प्रकार की लाल मिट्टी तथा हरी नारंगियों का अर्क़ काम में लाते हैं। शरीर में सुगन्धित तैल भी लगाते हैं। इन सब क्रियाओं से इनका शरीर अत्यन्त कोमल और चिकना रहता है। शरीर की कोमलता तथा स्थूलता इनका मुख्य सौन्दर्य समझा जाता है। शरीर को कोमल रखने के लिये स्त्रियां उसे धूप से बहुत बचाती हैं। बालक और

सौन्दर्य्य

बालिकाओं को मोटा करने के लिए ये लोग उन्हें खूब ठूँस ठूँस कर खिलाते हैं और परिश्रम नहीं करने देते। अधिक खाने के लिए बहुधा बालकों पर मार भी पड़ती है।
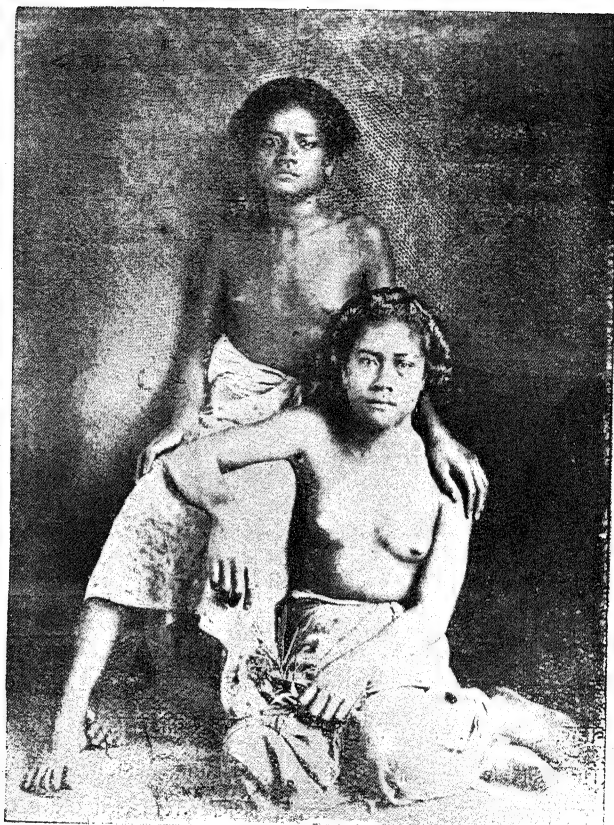
टांगा स्त्रियां
बालों को भिन्न भिन्न प्रकार से सँवारे हुए.

स्त्रियां अपने बालों को अनेक प्रकार से सँवारती हैं और उनमें फूल लगाती हैं। शनिश्चर की रात को स्त्रियां बालों में मूँगे की राख का लेप करती

टांगा स्त्री.

शनिश्चर की रात को बालों में मूँगे की राख का लेप किये हुए.

हैं जिससे इनके बाल खूब साफ़ हो जाते हैं और साथ ही हल्के बादामी रँग जाते हैं। इतवार को प्रातःकाल सिर धोने के पश्चात् सुगंधित तैल लगाकर बालों को सँवारती हैं। बालों में एक प्रकार का गोंद भी लगाती हैं जिससे बाल अधिक समय तक जैसे के तैसे रहते हैं। कुमारियां बालों की लटें बनाकर कन्धों पर छोड़ लेती हैं। विवाह के समय यह लटें काट डाली जाती हैं। विधवाओं के केश पूर्णतया काट डाले जाते हैं।

पालीनीशिया के अनेक द्वीपों में बच्चों की खोपड़ियां कृत्रिम ढंग से बिगाड़ दी जाती हैं। खोपड़ी के आगे पीछे लकड़ी अथवा पत्थर लगाकर उन्हें दबाते हैं। बालिकाओं की नाक को कृत्रिम रूप से चपटा बनाने की चेष्टा की जाती है। माताएं बालिकाओं की नाक इस प्रकार दबाती रहती हैं जिससे नाक कुछ चपटी हो जाती है और नथुने फैल जाते हैं। चपटी नाक और फैले हुए नथुने सुन्दर समझे जाते हैं। बालक और बालिकाओं के कान भी छेदे जाते हैं। ये लोग शरीर में रंग विरंग के गुदने भी गुदाते हैं। स्त्रियां बाहों पर चूड़ियाँ गुदवाती हैं और पुरुष फूल तथा अन्य इसी प्रकार के चित्र गुदवाते हैं। स्त्रियों की अपेक्षा पुरुषों में गुदवाने की प्रथा अधिक प्रचलित है। गुदना मनुष्य तथा पशुओं के दांत से गोदा जाता है। मिशनरियों के सत्संग से गुदने की प्रथा क्रमशः दूर होती जाती है; परन्तु कुछ द्वीपों में मिशनरियों के उपदेशों ने भी इस प्रथा का उन्मूलन नहीं किया। सामोआ द्वीप की स्त्रियां अब भी उस पुरुष को पसन्द नहीं करतीं जो कि गुदना नहीं गुदाए होता।

शारीरिक विकृति और गुदना

पालीनीशियन कभी सर्वथा नंगे नहीं रहे। यद्यपि वहां का जल वायु ऐसा है कि कपड़ा पहनना बिलकुल अनावश्यक जान पड़ता है; परन्तु तो भी लोग शौक़िया कपड़े पहनते हैं। पहले इनकी साधारण पोशाक पत्तियों की होती थी; परन्तु अब मिशनरियों तथा यात्रियों की कृपा से वहां मैन्चेस्टर के कपड़ों का रवाज फैल गया है। सामोआ में चटाइयाँ पहनने की प्रथा है। कुछ द्वीपों में नारियल के

परिच्छादन

सामोत्र्या स्त्री.
बालों को यूरोपियन ढंग से सँवारे हुए.

पत्ते के लहँगे पहनने का रवाज भी है। इनका सबसे सुन्दर परिच्छादन "सीसी" है। सीसी भिन्न भिन्न प्रकार की पत्तियों की बनी हुई एक झालर सी होती है जिसे स्त्रियां टापा के लहँगे के ऊपर कमर में बाँध लेती हैं। कभी कभी गले में भी सीसी पहनने की प्रथा है।

टापा और उसका निर्माण

इन लोगों का खास कपड़ा टापा होता है। टापा बनाने की कला पालीनीशिया की एक महत्वपूर्ण कला है और इस कला को पालीनीशियनों ने यथाशक्ति खूब उन्नत किया है।

टापा बनाने के लिए कुछ विशेष वृक्षों की छाल की आवश्यकता पड़ती है। ये वृक्ष इसी काम के लिए उगाये जाते हैं। सबसे अच्छा टापा 'पेपर मलबैरी' का बनता है। ग़रीब आदमी बरगद तथा अन्य वृक्षों से भी टापा बना लेते हैं। टापा बनाने का काम स्त्रियां ही करती हैं। पहले वृक्ष की छाल पानी में भिगो कर मुलायम की जाती है जिससे ऊपरी कड़ी तह निकल जाती है। भीतर की मुलायम तह फिर पानी में भिगोई जाती है। इसके पश्चात् इस छाल को एक लकड़ी के लट्ठे पर रखकर लकड़ी की मुँगरी से खूब कूटा जाता है। इस क्रिया से छाल के रेशे परस्पर मिल जाते हैं और वह फैलकर क़ाग़ज की झिल्ली सी हो जाती है। इसी प्रकार कई सप्ताहों तक छालों के टुकड़ों को पीट पीट कर जोड़ा जाता है; जिससे एक बहुत बड़ा थान, जिसकी लम्बाई २०० गज़ और चौड़ाई ४ गज़ तक होती है, तैयार हो जाता है। तैयार हो जाने पर थान धूप में सुखा लिया जाता है। धूप में सुखाने से छाल का रंग उड़ जाता है और वह सफ़ेद हो जाती है। इसके पश्चात् इस पर भिन्न भिन्न प्रकार के रंगों से बेल बूटे बनाये जाते हैं। केले की पत्तियों के बेल बूटे काट कर और उनमें रंग लगा कर थान पर छापती चली जाती हैं। फूलों को रंग में डुबोकर छापने की प्रथा भी है। इसके पश्चात् कपड़े को पानी के प्रभाव से बचाने के लिए उस पर राल अथवा गोंद की वार्निश कर दी जाती है। यह कपड़ा तीन चार महीने से अधिक नहीं ठहरता। टापा बनाने के लिए एक
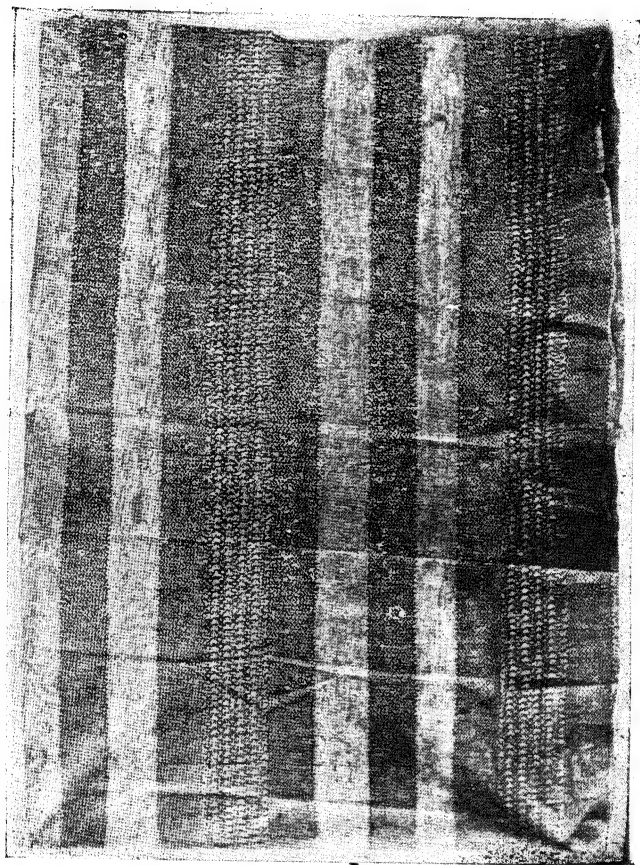
हवाई द्वीप का टापा.

सामोआ स्त्री.
मुखिया की टोपी पहने हुए.

अलग मकान होता है। नित्यकर्म से छुट्टी पाकर स्त्रियां उसमें चली जाती हैं और बैठ कर काम करती हैं। बहुधा १५।२० स्त्रियां एकसाथ बैठ कर टापा बनाती हैं। पहले टापा बनाने का कार्य स्त्रियों के लिए इतना महत्वपूर्ण समझा जाता था कि रानी से लेकर एक सामान्य स्त्री तक इस कार्य को बड़े उत्साह से करती थी। टापा बनाने में स्त्रियों में बड़ी प्रतिस्पर्धा रहती है। प्रत्येक स्त्री यह चेष्टा करती है कि उसका बनाया हुआ टापा, अन्य स्त्रियों के बनाये हुए टापे की अपेक्षा, अधिक सुन्दर और टिकाऊ हो। इस टापे से अनेक प्रकार के वस्त्र बनाये जाते हैं। आज कल इस टापे से जो वस्त्र बनते हैं वे अधिकतर यूरोपियन काट छांट के होते हैं।

ताहीती द्वीप में एक प्रकार का कपड़ा बनाया जाता है जिसे 'तिप्यूता' कहते हैं। कई कपड़ों को एक साथ कूट कर एक मोटा कपड़ा बना लिया जाता है और उसको वृक्ष की छाल से मढ़ लिया जाता है। इसमें एक बड़ा छिद्र करके इसे गले में डाल लेते हैं। यह परिच्छादन गले से लेकर घुटनों तक लटकता रहता है।

सामोआ जाति चटाई के वस्त्र पहनना अधिक पसन्द करती है। पहले चटाइयाँ इतनी महत्वपूर्ण समझी जाती थीं कि वे सिक्के तक का काम देती थीं।

सामोआ के चटाई के वस्त्र

अब भी वहां सुन्दर चटाइयों के वस्त्र बड़े सुन्दर तथा मूल्य-वान समझे जाते हैं। ये चटाइयाँ एक वृक्ष की पत्तियों से बनाई जाती हैं जो कागज़ की तरह पतली होती हैं। पहले इन पत्तियों की धज्जियां बनाई जाती हैं जिनकी चौड़ाई एक इंच का सोलहवां हिस्सा
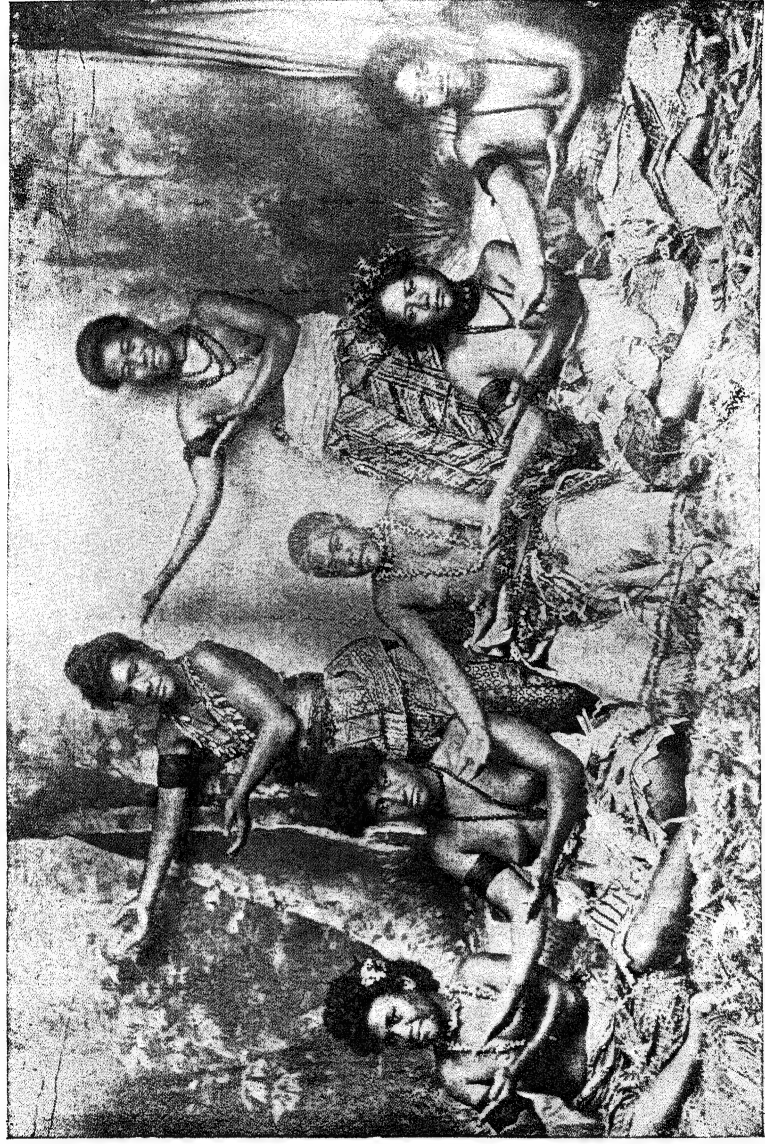
सामोश्रा की नाचने वाली स्त्रियां.
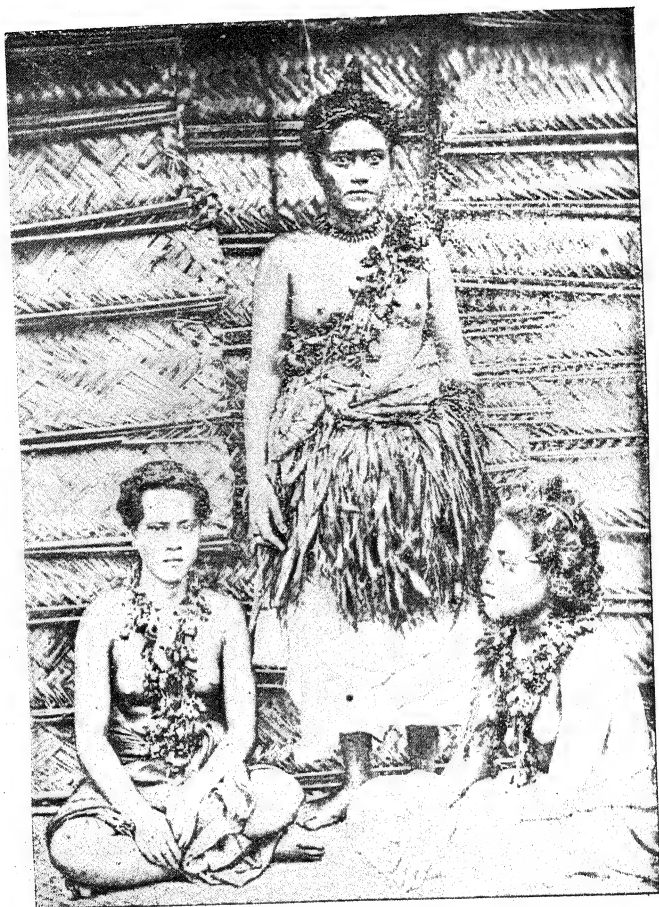
सामोत्रा द्वीप के टूटुइला स्थान की स्त्रियां.
परिच्छादन तथा अलंकार.

होती है। इन धज्जियों को बुन कर चटाई बनाते हैं। बुनते समय इसमें रंग-विरंग के पक्षियों के पर लगा दिये जाते हैं। कभी कभी एक चटाई के बुनने में कई वर्ष लग जाते हैं और जब यह तैयार होती है तब इसका मूल्य सौ डेढ़ सौ रुपयों से कम नहीं होता। इन चटाइयों को ये लोग बड़े यत्न से रखते हैं। अतएव ये अनेक पीढ़ियों तक काम देती हैं। इन चटाइयों से शरीर के परिच्छादन का काम लिया जाता है। गाँव के बड़े आदमी इसी चटाई की पोशाक पहनते हैं।

हिबिस्कस नामक वृक्ष की छाल से भी एक प्रकार की चटाई बनाई जाती है। इस चटाई को पुरुष या तो कमर में बाँध लेते हैं अथवा इसके बीच में एक छेद करके गले में डाल लेते हैं। ये चटाइयाँ ६ फीट लम्बी और ४ फीट चौड़ी होती हैं। अब मिशनरियों की कृपा से वहां इन चटाइयों का स्थान मैनचेस्टर के बने हुए कपड़ों ने लेना आरम्भ कर दिया है।

पालीनीशिया में स्त्रियां गहने भी पहनती हैं। फूलों के गहने पहनने की प्रथा अधिक है। युवतियां केशों में फूल गूँधना बड़ा रुचिकर समझती हैं।

शृंगार

कानों को छिदवा कर उनमें भी फूल पहनती हैं। गहनों में केवल हार, गलेबन्द तथा चूड़ियां पहनने का रवाज अधिक है। गहने ह्वेल मछली और जंगली सुअर के दांतों के होते हैं। ह्वेल मछली के दाँतों के छोटे छोटे टुकड़ों का गलाबन्द बड़ा सुन्दर गहना समझा जाता है। सुअर के दाँत के कड़े बना कर हाथों में पहनती हैं। सीप और पोत के हार बड़े चाव से पहने जाते हैं। इनका एक बड़ा मूल्यवान गहना जिसे ट्वींगा कहते हैं, बड़ा सुन्दर गहना समझा जाता है। इसकी बनावट बड़ी विचित्र होती है। यह सीप, पोत तथा पक्षियों के परों से बनता है। यद्यपि इसके पहनने में कष्ट होता है तथापि लोग इसे बड़े शौक से पहनते हैं। नाच में तो इसका पहनना अनिवार्य समझा जाता है। इसके पहनने में कई घण्टे तक खर्च होते हैं।

सामोआ स्त्री.

'टापा' की बनी हुई यूरोपियन पोशाक में.

पालीनीशियन माताएं अपने बालकों के लालन पालन को उसी दृष्टि से देखती हैं जिस दृष्टि से कि एक बालिका अपनी गुड़िया को देखती है। कभी वे उसे बड़ा प्यार करने लगती हैं और कभी उसकी ओर से बिल्कुल उदासीन हो जाती हैं। इस कारण बहुधा उनकी सन्तानें नष्ट हो जाती हैं।

जन्म और बाल्यकाल

पालीनीशिया के कुछ भाग में स्त्री की प्रथम तीन सन्तानें मार डाली जाती थीं। अतएव ऐसे परिवार बहुत कम थे जिनमें दो से अधिक मनुष्य हों।

बाल हत्या

ताहीती द्वीप में ऐसा पुरुष, जिसके तीन चार सन्तानें हों, एक विशेष नाम से पुकारा जाता था। कुछ द्वीपों में अकाल के भय से क़ानूनन केवल दो सन्तानों के जीवित रखने का

अधिकार दिया जाता था। सामोआ द्वीप में खाद्य पदार्थ का आधिक्य है, अतएव वहां बालकों की हत्या नहीं होती थी। बच्चों को नष्ट करने का अधिकार पिता को होता था। यदि कोई उच्च श्रेणी का पुरुष किसी निम्न श्रेणी की स्त्री से विवाह कर लेता था तो उसकी सन्तान को जीवित रहने का अधिकार प्राप्त नहीं रहता था; क्यों कि उसके जीवित रहने से पुरुष के वंश की मर्यादा में बट्टा लग जाता था। बालकों की अपेक्षा बालिकाओं की हत्या अधिक की जाती थी; क्यों कि बालकों की अपेक्षा बालिकाएं कम काम की चीज समझी जाती थीं। अब वहां ईसाई धर्म के फैलने से बालकों की हत्या बिल्कुल बन्द हो गई है। केवल इसी कारण से स्त्रियों ने ईसाई धर्म का पूर्ण स्वागत किया है; क्यों कि बालकों की हत्या स्त्रियों के लिए सदैव दुखदाई होती थी।

सामोआ स्त्री.
केले के पत्तों का हार पहने हुए.

२

सामोअन बाल्यकाल, गोद की प्रथा, सगाई की वयस, विवाह प्रथा, बहु-विवाह, दाम्पत्य नियम, वैधव्य.

मिसेस चर्चिल सामोअन बालकों के सम्बन्ध में लिखती हैं "जंगलियों का बच्चा भी माता पिता के लिए हर्ष व आनन्द का कारण होता है।

सामोअन बाल्यकाल

बालकों के साथ उनके माता पिता बड़ा अच्छा व्यवहार करते हैं और उनके हृदय में यह धारणा उत्पन्न करने की चेष्टा करते हैं कि माता पिता उनके आज्ञाकारी सेवक हैं। छोटे छोटे बच्चे अपने माता पिता पर हुक्म चलाते नित्य ही देखे जाते हैं। बच्चों को डाटना फटकारना तथा मारना पीटना वहां बहुत कम देखने में आता है।" जब कन्याएं कुछ बड़ी हो जाती हैं तो वे अपनी माताओं को गृह कार्य में सहायता देना आरम्भ कर देती हैं। जब कोई बच्चा बीमार हो जाता है तो उसे अपवित्र छाया तथा छूतछात से बचाने के लिए वह एक अलग स्थान में रखा जाता है और नित्य सुअर की भेंट दी जाती है।

गोद की प्रथा

इन लोगों में गोद लेने की प्रथा खूब है। माता पिता अपनी सन्तान को, विशेषतः ऐसी सन्तान को जो उन्हें किसी प्रकार का दुःख पहुंचाती है, दूसरों को गोद दे देते हैं और स्वयं किसी दूसरी सन्तान को गोद ले लेते हैं। सामोआ में प्रायः पिता अपनी भगिनी को अपनी सन्तान दे देता है। भगिनी बदले में भ्राता को कुछ सुन्दर चीज़ें भेंट स्वरूप दे देती है। जिस प्रकार बच्चे गोद लिये जाते हैं उसी प्रकार माता पिता भी बना लिये जाते हैं। कोई बालक या बालिका किसी भी स्त्री पुरुष को स्वेच्छा से अपने माता पिता बना सकती है, चाहे उसके असली माता पिता जीवित ही क्यों न हों। जहां किसी बच्चे के माता अथवा पिता ने उससे कोई कटु शब्द कहा, बस, वहीं वह अपने बनाये हुए माता पिता के पास

चला जाता है और जबतक उसके असली माता पिता उसे कुछ भेंट देकर प्रसन्न नहीं कर लेते तब तक वह नहीं लौटता। कभी कभी ऐसा भी होता है कि बालक किसी प्रकार भी नहीं लौटता और अपने दूसरे माता पिता के पास रहता है।

सामोआ स्त्री.
'टापा' के लँहगे के ऊपर मखमल का कुरता पहने हुए.

सगाई की वयस

बारह तेरह बर्ष की वयस के पूर्व कन्या की सगाई नहीं की जाती। अविवाहिता कन्याओं को पूर्ण स्वतंत्रता प्राप्त रहती है। यदि किसी विशेष कारण से कन्या की सगाई बाल्यावस्था में ही हो जाती है तो भी वह घर के बाहर अकेली नहीं निकलने दी जाती।

सामोअन स्त्रियाँ.

कन्या विक्रय अथवा वर विक्रय की प्रथा पालीनीशिया में बिल्कुल नहीं है। उच्च श्रेणी के लोगों में कन्या और वर का चुनाव माता पिता द्वारा किया जाता है। निम्न श्रेणी के लोगों में वर स्वयं ही कन्या ढूँढ़ लेता है; परन्तु विवाह सम्बन्ध की बात वह स्वयं नहीं करता। यह कार्य वह अपने किसी मित्र द्वारा करवाता है। कुलीन स्त्रियों को यह अधिकार प्राप्त रहता है कि वे अपने बराबर के अथवा अपने से नीच कुल के पुरुष से स्वयं विवाह का प्रस्ताव करें। ताहीती द्वीप में यदि स्त्री अपने पति से उच्च कुल की होती है तो उसे अधिकार होता है कि वह अन्य जितने पति चाहे कर ले, यद्यपि पत्नी वह उसी की कहलाती है जिससे कि उसका प्रथम विवाह होता है।

विवाह प्रथा

विवाह के समय साधारणतया एक भोज देने की प्रथा है जिसमें वर और कन्या एक साथ बैठ कर भोजन करते हैं। भोज के पश्चात् वरपक्ष तथा कन्यापक्ष के लोग परस्पर भेंट का लेन देन करते हैं। सामोआ द्वीप में कन्या के रिश्तेदार और मित्र दहेज के रूप में वरपक्ष को चटाइयाँ और कपड़े देते हैं और वर के रिश्तेदार और मित्र कन्यापक्ष वालों को नौकाएँ तथा सुअर देते हैं। परन्तु इस लेन देन में ख़र्च अधिक पड़ने के कारण यह केवल धनवानों में ही प्रचलित है। ग़रीब लोग केवल भोज देकर ही इति श्री कर देते हैं। सबसे सस्ता विवाह यह समझा जाता है कि वर कन्या को चुपके से भगा ले जाय; परन्तु ऐसा बहुत कम होता है। ऐसा उसी समय में होता है जब कि वर को अपनी पसन्द की हुई कन्या से विवाह करने में कुछ अड़चनें पड़ती हैं।

कभी कभी ऐसा भी होता है कि कन्या को जो दहेज देना निश्चित होता है वह सबका सब उसे पहना दिया जाता है। चालीस चालीस गज़ की चटाइयाँ कन्या के शरीर पर लपेट दी जाती हैं। यद्यपि यह चटाइयाँ बहुत पतली और रेशम की तरह मुलायम होती हैं परन्तु फिर भी इनके कारण कन्या का हुलिया तो बिगड़ही जाता है साथही उसे उठना बैठना भी दूभर हो

जाता है। ऐसी दशा में दो तीन स्त्रियां उठाने बैठाने का काम करती हैं। विवाह के समय कन्या के हाथों, पैरों, तथा वक्षस्थल पर हल्दी तथा चन्दन का लेप किया जाता है।

"सीसी" और सुअर के दाँतों का हार.

हवाई द्वीप में विवाह की रस्म में कभी कभी केवल इतना किया जाता है कि वर कन्या के ऊपर 'टापा' डाल देता है तत्पश्चात् एक भोज देकर विवाह की रस्म पूरी कर दी जाती है।

ताहीती में विवाह के पहले देवताओं की सम्मति ले लेना आवश्यक समझा जाता है। देवता की सम्मति लेने के लिए यह किया जाता है कि कन्या के घर में एक वेदी बनाकर उस पर कन्या के मत पुरुषों की हड्डियां और खोपड़ियां रखी जाती हैं। वर तथा कन्या को विवाह के कपड़े पहना कर वेदी के सामने खड़ा करते हैं। पुरोहित वर से पूछता है "तू अपनी पत्नी को छोड़ेगा तो नहीं?" इस पर वह उत्तर देता है "नहीं"। इसी प्रकार कन्या से पूछा जाता है। कन्या के नहीं कह देने पर पुरोहित उन्हें सुखी रहने का आशीर्वाद देता है। इसके पश्चात् दोनों पक्ष वाले परस्पर भेंट का लेन देन करते हैं। कभी

कभी कन्यापक्ष की स्त्रियां शार्क मछली के दांतों से अपने मुख को चीर कर रक्त निकालती हैं और उस रक्त को कपड़े में लेकर कन्या के चरणों पर चढ़ाती हैं।

'सीसी' और सुअर के दांतों का हार पहने हुए एक स्त्री.

बहु-विवाह की प्रथा यहां खूब प्रचलित है। सामोआ द्वीप में वरों को विवाहित कन्याओं के साथ एक या दो अन्य कन्याएं भी दी जाती हैं। ये कन्याएं या तो विवाहिता कन्या की भतीजी होती हैं या उसके नाना के परिवार की। इन कन्याओं को यदि वर चाहे तो अपनी उप-पत्नियाँ बना सकता है। यदि कोई बड़ा आदमी किसी गुलाम जाति की कन्या से विवाह करता है तो कन्या की जितनी छोटी बहिनें होती हैं वे सब उस वर की पत्नियाँ समझी जाती हैं। इतना होते हुए भी सामोअन लोगों की रुचि बहु-विवाह की ओर नहीं है; क्योंकि बहु-विवाह के कारण घर में नित्य कलह रहती है। बड़े बड़े सर्दारों को छोड़ कर अन्य लोग दो पत्नियों से अधिक नहीं रखते।

बहु-विवाह

हवाई द्वीप में अधिक पत्नियों का होना पति की प्रतिष्ठा का कारण समझा जाता है। अतएव प्रत्येक आदमी कई विवाह करने का प्रयत्न करता है।

एक यात्री ने एक टांगा स्त्री से बहु-विवाह की बातचीत की। टांगा स्त्री ने बहु-विवाह पर अपने विचार प्रगट करते हुए कहा– "एक पत्नी होना उसी दशा में अच्छा है जब कि पति उससे पूरा प्रेम रखता हो। यदि पति पत्नी से प्रेम नहीं रखता तो एक पत्नी का होना बहुत ही बुरा है; क्योंकि वह उस पर निरन्तर अत्याचार करता रहता है। ऐसी दशा में बहुत सी पत्नियों के होने से उसका ध्यान अपनी अन्य पत्नियों की ओर बँटा रहता है और वह पत्नी, जिससे वह प्रेम नहीं रखता, उसके अत्याचारों का शिकार नहीं होने पाती।"

टांगा स्त्री का यह साधारण कथन इस बात का परिचायक है कि अपने यहां प्रचलित बुरी से बुरी प्रथा के सम्बन्ध में लोग कैसे कैसे सुविधाजनक विश्वास कर लिया करते हैं और उनको उपयोगी सिद्ध करने के लिए काम चलाऊ कारण भी पेश कर देते हैं।
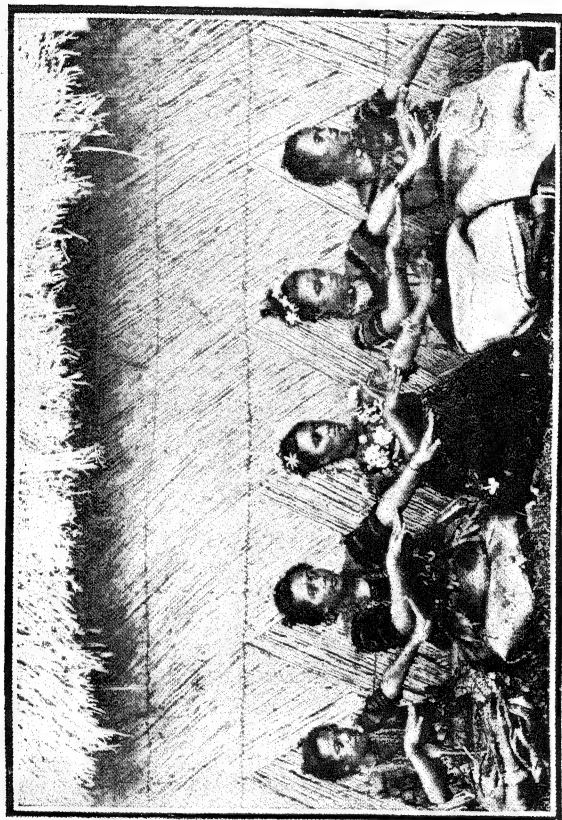
टोंगा नाच,

जब किसी पुरुष की मृत्यु हो जाती है, तब उस पुरुष का भ्राता उसकी पत्नियों का स्वामी और उसके बच्चों का पिता हो जाता है। उसे यह भी अधिकार होता है कि यदि वह चाहे तो उन्हें अपने किसी रिश्तेदार या मित्र को दे दे; परन्तु इस नियम में स्त्री की इच्छा का प्राधान्य सदैव रहता है। यदि स्त्री चाहे तो ऐसा हो सकता है अन्यथा वह स्त्री अपना समस्त जीवन वैधव्य में व्यतीत कर सकती है।

वैधव्य
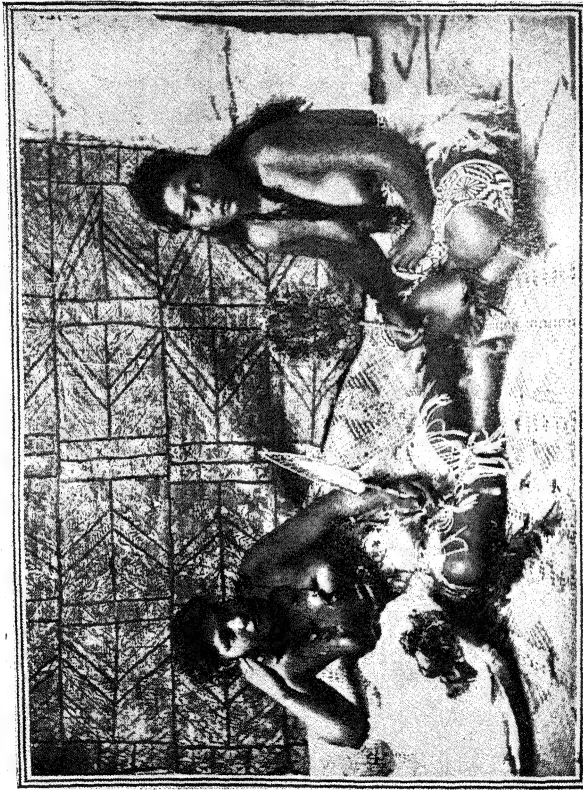
सामोआ द्वीप की 'ताऊपाऊ' स्त्रियां,

हवाई द्वीप की नाचने वाली स्त्रियां,

३

स्त्रियों का सामाजिक स्थान—जातीय प्रभाव, भौगोलिक प्रभाव, सामाजिक प्रभाव, गान और नृत्य, टाऊपाऊ.

पालीनीशिया में स्त्रियों का सामाजिक स्थान तीन बातों पर निर्भर है। जाति, भूगोल तथा समाज।

जातीय प्रभाव

पालीनीशिया के लोगों का शरीर यद्यपि बढ़ जाता है लेकिन उनका हृदय बालकों सा ही रहता है। शरीर यद्यपि देखने में सुन्दर होता है तथापि अधिक बलवान नहीं होता। शारीरिक परिश्रम कम पड़ने के कारण शारीरिक शक्तियों का विकास भी पूर्णतया नहीं होता। यद्यपि उनमें सदैव परस्पर लड़ाई झगड़े होते रहते हैं तथापि उन्हें एक वीर जाति नहीं कहा जा सकता, इसका कारण भौगोलिक प्रभाव है।

भौगोलिक प्रभाव

पालीनीशिया द्वीपों में मनुष्य जाति की उन्नति के साधन बहुत कम हैं। खाद्य पदार्थों की कमी न होने के कारण अधिक शारीरिक परिश्रम नहीं करना पड़ता। मानसिक परिश्रम का भी सर्वथा अभाव है। धातुओं का अभाव होने से कोई व्यापारिक उन्नति नहीं हो सकती और पशुओं के अभाव के कारण खेती-बारी की उन्नति का मार्ग भी बन्द है। अधिकांश भूमि बिल्कुल ऊसर है जिसमें किसी प्रकार का अन्न उत्पन्न नहीं हो सकता—केवल नारियल उत्पन्न हो सकता है। इसके अतिरिक्त पालीनीशिया के द्वीप समुद्र के बीच में बिल्कुल अलग अलग स्थित हैं। अतएव अन्य जातियों से इनका कोई सम्बन्ध स्थापित होने नहीं पाता। केवल टांगा और सामोआ द्वीप ही ऐसे हैं जिनका सम्बन्ध दूसरे द्वीपों से रहा है; इसी कारण ये दो जातियाँ सभ्यता के पथ पर कुछ अग्रसर हुई हैं।
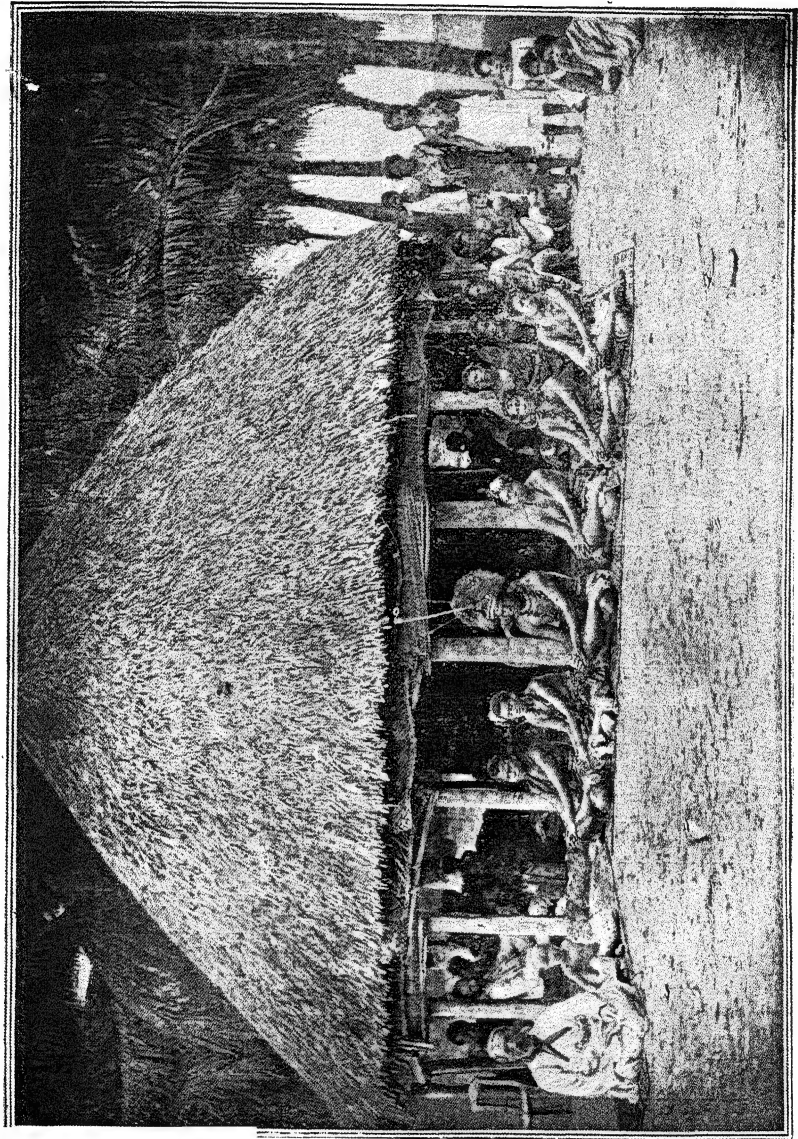
सामोआ द्वीप का 'शिव-नृत्य'

इन लोगों के धार्मिक विचार भी ऐसे हैं जिनका प्रभाव स्त्री जाति पर विशेष प्रकार से पड़ता है। इन्हीं धार्मिक विचारों के कारण व्यभिचार का आधिक्य है और वैवाहिक सम्बन्ध दुर्बल है। इन सब बातों का परिणाम अधिकांश रूप में स्त्रियों को ही भोगना पड़ता है।

सांमाजिक प्रभाव

हवाई द्वीप में स्त्रियों को पुरुषों के साथ भोजन करने का अधिकार नहीं है। उनका भोजन उस चूल्हे पर नहीं बन सकता जिस पर उनके पति का भोजन बनाया जाता है। वहां स्त्रियों के लिए कुछ खाद्य पदार्थ भी वर्जित हैं। स्त्रियों को केला, नारियल तथा कुछ प्रकार की मछलियाँ खाने का अधिकार नहीं है। एक बार कैपियोलानी नाम की एक स्त्री ने केला खा लिया था इस पर वह जाति के बाहर कर दी गई। एक लड़के की भेंट देने पर वह पुनः जाति में सम्मिलित की गई। देवस्थानों में भी स्त्रियों को जाने का अधिकार प्राप्त नहीं है; क्योंकि उनके वहां जाने से वह स्थान अपवित्र हो जाता है। हवाई द्वीप में स्त्रियां पुरुषों का एक खिलौना मात्र समझी जाती हैं।

पालीनीशिया के सब द्वीपों में सामोआ द्वीप अधिक उन्नत और सभ्य है। वहां स्त्रियों को अधिक सुविधाएं प्राप्त हैं और पुरुषों की दृष्टि में उनका महत्व भी अधिक है। टांगा द्वीप में यद्यपि अन्य द्वीपों की अपेक्षा स्त्रियां अधिक आदर की वस्तु समझी जाती हैं परन्तु इतना होते हुए भी सामोआ के मुक़ाबिले में उसने इस ओर कम उन्नति की है।

पालीनीशिया के लोग नाचने गाने के बड़े शौकीन हैं। इसका प्रचार अन्य द्वीपों की अपेक्षा सामोआ में अधिक है। टांगा द्वीप का 'ऊला' नाच केवल पुरुषों का नाच है। बाजों में सबसे मुख्य बाँसुरी है। यह बाँसुरी मुँह से न बजाई जाकर नाक से बजाई जाती है। इस बाँसुरी को अधिकतर स्त्रियां ही बजाती हैं।

गान और नृत्य

पालीनीशिया में एक प्रकार की मदिरा बहुत होती है जिसे 'कावा' कहते हैं। प्रत्येक उत्सव में कावा का व्यवहार होता है। यह कावा एक वृक्ष की जड़ से बनाया जाता है।

ताहीती स्त्री.

पालीनीशिया के सामोत्र्रा द्वीप में एक मुखिया स्त्री होती है। यह स्त्री गांव के मुखिया द्वारा चुनी जाती है। यह मुखिया स्त्री यातो मुखिया की पुत्री या गांव के किसी कुलीन घराने की कन्या होती है। इस मुखिया स्त्री को 'टाऊपाऊ' कहते हैं। गांव में टाऊपाऊ के लिये एक बड़ा मकान अलग रहता है। गांव की समस्त स्त्रियां टाऊपाऊ के आधीन रहती हैं। टाऊपाऊ अपने मकान में अपनी सहेलियों के साथ रहती है। वह कभी अकेली बाहर नहीं निकलने पाती। गांव का कोई भी पुरुष टाऊपाऊ के मकान में नहीं जा सकता। जब गांव में मेहमान आता है तो टाऊपाऊ उसका आदर सत्कार करती है। इनका मुख्य काम उत्सवों के समय कावा पिलाना होता है। कावा युद्ध, विवाह तथा अन्य महत्वपूर्ण कार्यों के प्रारम्भ में टाऊपाऊ द्वारा पिलाया जाता है। टाऊपाऊ का दूसरा मुख्य काम नाचना है। नाचने में टाऊपाऊ बड़ी प्रवीण होती हैं; क्योंकि यह कार्य उन्हें भली भाँति सिखाया जाता है। टाऊपाऊ की सहेलियाँ भी उसके साथ नाचती हैं। इनका मुख्य नाच 'शिव' होता है। यह नाच बैठे बैठे ही होता है। इस नाच में कमर के ऊपर का भाग हिलता रहता है और पैरों से ताल दी जाती है।

टाऊपाऊ

पालीनीशिया में ताहीती द्वीप बड़ा रमणीक स्थान है। इस द्वीप को यात्री पालीनीशिया का बैकुण्ठ कहते हैं। यहां का जल वायु बड़ा अच्छा है। समस्त पालीनीशिया में टांगा द्वीप तथा सामोत्र्रा द्वीप की स्त्रियों का जीवन सुखमय जीवन कहा जा सकता है। इन द्वीपों की स्त्रियों से अधिक काम नहीं लिया जाता। प्रत्येक महत्वपूर्ण कार्य में उनसे परामर्श लिया जाता है और उसमें उनको सम्मिलित किया जाता है। प्राय: युद्ध में स्त्रियां अपने पति के साथ साथ रहती हैं और उसके घायल हो जाने पर उसकी सेवा सुश्रूषा करती हैं। टाऊपाऊ चुनने की प्रथा केवल सामोत्र्रा द्वीप में है। टाऊपाऊ का विवाह किसी मुखिया अथवा मुखिया के पुत्र के साथ किया जाता है।

सामोत्र्रा तथा टांगा द्वीप के अतिरिक्त प्राय: अन्य सब द्वीपों में स्त्रियां केवल पुरुषों की कामवासना तृप्ति करने तथा भोगविलास की सामग्री समझी जाती हैं।

न्यू ज़ीलैण्ड

न्यू ज़ीलैण्ड और पालीनीशियन, मावरी स्त्री का स्थान, टापू, जन्म और बाल्यकाल, गुदना, वस्त्र निर्माण कला, परिच्छादन, शृंगार, टीकी, दैनिक जीवन, भोजन, खाद्य पदार्थ पकाने और सुरक्षित रखने की युक्ति, मावरी उत्सव तथा नृत्य, मनुष्य भक्षण, युद्ध में स्त्रियाँ, विवाह प्रथा.

मावरी जाति के लोग अर्थात् न्यू ज़ीलैण्ड के निवासी एक प्रकार से पालीनीशियन ही हैं। उनके आचार विचार पालीनीशिया के लोगों से बहुत कुछ मिलते जुलते हैं, तथापि उनमें कुछ ऐसी महत्त्वपूर्ण विशेषताएं उत्पन्न हो गई हैं जिनके कारण वे पालीनीशिया निवासियों से भिन्न मालूम होते हैं।

न्यू ज़ीलैण्ड और पालीनीशियन

पहले, अर्थात् सन् १२५०–१३५० ईस्वी में पालीनीशिया के निवासी न्यू ज़ीलैण्ड में आया जाया करते थे। सन् १३५० में पालीनीशिया के निवासियों की एक बड़ी संख्या न्यू ज़ीलैण्ड में आकर बस गई और इन्हीं लोगों ने मावरी जाति को जन्म दिया। सन् १३५० ई० से लेकर यूरोपियनों के आगमन तक मावरी जाति और पालीनीशियनों में किसी प्रकार का सम्पर्क नहीं रहा।

मावरी लोग पालीनीशिया से चेहरे मोहरे में बहुत कुछ मिलते जुलते हैं; परन्तु इतना होते हुये भी उनमें बहुत कुछ बिभिन्नता है। मावरी जाति के केश

कुछ घुंघराले होते हैं और शरीर में भी वे पालीनीशियनों से अधिक सुदृढ़ और सुडौल होते हैं। इसका कारण केवल यह है कि मावरीयों को अपने जीवन निर्वाह के लिए पालीनीशियनों की अपेक्षा अधिक परिश्रम करना पड़ता रहा है। पहले ये लोग युद्ध को सबसे उत्तम व्यवसाय समझते थे; अतएव बड़े कठोर हृदय और रक्त पिपासु होते थे। कुलीनों में जाति गौरव तथा वंश गौरव की मात्रा किसी समय में बहुत थी। इसके साथही साथ उनका चरित्र भी बहुत ही सीधा सादा होता था; परन्तु आधुनिक सभ्यता की लहर में मावरी जाति के प्राचीन रीति रवाज बिल्कुल बह गये। यूरोपियनों के पदार्पण से उनका रक्त भी दूषित होगया अर्थात् उनके रक्त में यूरोपियन रक्त का सम्मिश्रण हो गया। उनके प्राचीन उद्योग धंधे भी बहुत कुछ लुप्त होगये। उनके जातीय नृत्य में भी यूरोपियन नृत्य की झलक आ गई।

मावरी स्त्री का स्थान

मावरी जाति में स्त्रियों को अच्छा स्थान प्राप्त है। स्त्रियाँ प्रायः जीवन के सब कार्यों में भाग लेती हैं यहाँ तक कि युद्ध में भी वे पुरुषों के साथ साथ रहती हैं। महत्वपूर्ण प्रश्नों पर उनका परामर्श लिया जाता है। कुलीन स्त्रियाँ बड़े आदर की दृष्टि से देखी जाती हैं; क्योंकि उनके साथ विवाह करने से उनके पति को धन तथा मान दोनों की प्राप्ति होती है। स्त्रियाँ अपने सम्बन्धियों से खूब स्नेह करती हैं और पति या किसी अन्य प्रिय सम्बन्धी की मृत्यु पर आत्महत्या तक कर लेती हैं। परन्तु इसके साथही साथ उनमें क्रोध तथा ईर्षा की मात्रा भी खूब होती है। पति से दुर्व्यवहार का बदला लेने के लिए, पहले, वे अपने बच्चों तक की हत्या कर डालती थीं।

टापू

अभिमंत्रण द्वारा पवित्र करने के कार्य को टापू कहा जाता है। अमुक मनुष्य टापू है, अमुक स्थान टापू है—इसका यह अर्थ हुआ कि उक्त मनुष्य अथवा उक्त स्थान पवित्र है। टापू की प्रथा अधिकतर यूरोपियनों के आगमन के पूर्वतक प्रचलित रही, इसके पश्चात् वह क्रमशः नष्ट हो गई। पुरोहित तथा बड़े बड़े मुखिया
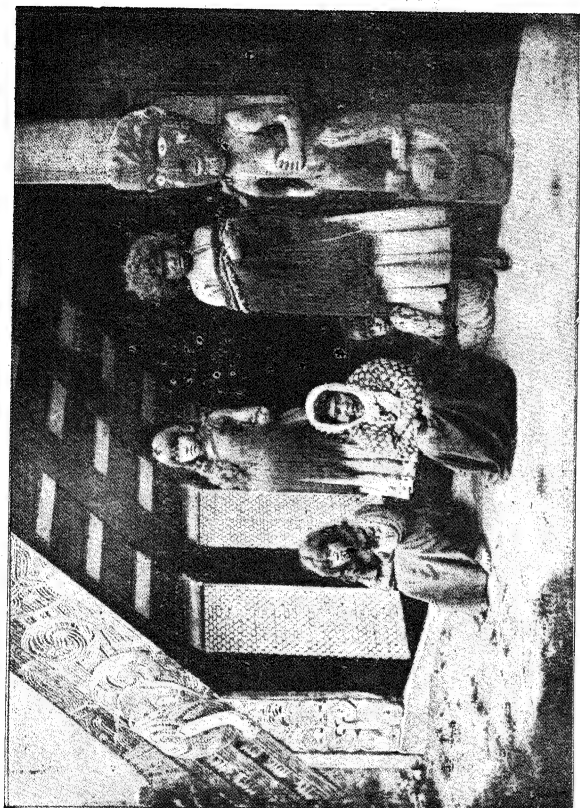
मावरी स्त्रियाँ और लड़कियाँ.
इस चित्र में केशों की विचित्रता स्पष्ट है.

सदैव टापू समझे जाते थे और उनमें इतनी शक्ति थी कि जिस मनुष्य को या जिस वस्तु को वे छू देते थे वह भी टापू होजाता था। सर्व साधारण को यह अधिकार प्राप्त नहीं होता था कि वे किसी टापू मनुष्य अथवा टापू वस्तु को छू सकें। मुखियाओं की चीज़ें टापू होने के कारण उन्हें निम्न श्रेणी के लोग नहीं छू सकते थे। ऐसी अनेक घटनाएं देखी गई जिनमें किसी निम्न श्रेणी के मनुष्य ने भूल से कोई टापू वस्तु छू ली और अपनी भूल का ज्ञान होने पर वह बेचारा

मावरी स्त्री।

केवल भय से मर गया। क्योंकि लोगों के हृदय में यह विश्वास जमा रहता था कि टापू वस्तु के छूने से मृत्यु हो जाती है। पकने के पहले खेत टापू कर दिये जाते थे और जब तक उनका टापूपन दूर नहीं किया जाता था वे काटे नहीं जा सकते थे। किसी मनुष्य को किसी कार्य में लगाते समय टापू कर देते थे और जब तक वह टापूपन दूर न किया जाता था वह मनुष्य वहाँ से उठ नहीं सकता था।

पहले समय में कन्याओं का जन्म बुरा समझा जाता था और इसलिए कभी कभी वे मार डाली जातीं थीं। यदि वे जीवित रहने दी जाती थीं तो

जन्म और बाल्यकाल

गाँव का पुरोहित गाँव के बाहर एक पवित्र नदी में उसको स्नान कराता था। यह रस्म माता और बालिका को टापू करने के लिए अदा की जाती थी। इसके पश्चात् वे कुछ दिनों तक एक अलग झोंपड़े में रखी जाती थीं। कुछ दिनों उपरान्त उनका टापूपन दूर कर दिया जाता था और बालिका का नाम-करण करने के पश्चात् उसे घर में लाया जाता था।

माओरी बालक और बालिकाएँ अपना बाल्यकाल बड़े सुख में व्यतीत करते थे और उनका लालन-पालन बड़े लाड़ प्यार से करते थे। इसके कारण बहुधा बालक दुष्ट प्रकृति के हो जाते थे।

कुलीन वंश की बालिकाओं के कुछ बड़ी होने पर गुदना गोदा जाता था। न्यू ज़ीलैण्ड में गुदना गुदाना बड़ा महत्वपूर्ण कार्य समझा जाता था। वहाँ

गुदना

गुदना गुदाने का ढंग भी निराला था। पालीनीशिया की तरह वहाँ सुई से गुदना नहीं गोदा जाता था। पहले ठोढ़ी और ऊपर के ओंठ पर कोयले से आकार बना लिया जाता था; तदुपरान्त एक हड्डी के नश्तर से वह स्थान इतना चीरा जाता था कि रक्त की धार बहने लगती थी। रक्त पोंछकर उस पर एक प्रकार की काली बुकनी मल दी जाती थी। इस प्रकार गुदना गुदाने वालों को बड़ा कष्ट होता था। इस कष्ट को दूर करने अथवा यों समझिये कि गुदने की क्रिया सकुशल समाप्त

हो जाने के लिए गुदाने वाले को टापू बना दिया जाता था और भेंट चढ़ाई जाती थी। किसी प्रतिष्ठित मुखिया की कन्या के गुदना गुदाते समय नरबलि भी दी जाती थी। स्त्रियों के ऊपरी ओंठ तथा ठोढ़ी पर गुदना गोदा जाता था।

कुलीन मावरी स्त्री.
गुदना गुदाए हुए और सिर में पक्षी के पर लगाए हुए.

बालिकाओं की मुख्य शिक्षा चटाइयाँ बुनना होती थी। बालिका को चटाइयाँ बुनने की शिक्षा देने का भार माता पर रहता था 'हाराकीकी' नामक

वस्त्र-निर्माण कला

वृक्ष से एक प्रकार का सन निकाल कर, जो रेशम की तरह मुलायम और चमकदार होता है, वृक्षों की छाल के रंग से लाल पीला रँग लिया जाता है। इसके अतिरिक्त अनेक वृक्षों की पत्तियों से कोई पचास प्रकार का सन बनाया जाता था। इस सन से डोरा बटा जाता था और इसी डोरे से चटाइयाँ बनाई जाती थीं।

चटाई बुनने की शिक्षा का कार्य बड़ा पवित्र समझा जाता था। आरम्भ में बालिकाओं को इस कार्य की शिक्षा देते समय पुरोहित कुछ मंत्र पढ़ता था जिससे छात्र का मष्तिष्क शिक्षा ग्रहण करने के योग्य बन जाये। चटाई में बुनने के समय कभी कभी पक्षियों के पर प्रविष्ट कर दिये जाते थे। अधिकतर 'कीवी' नामक पक्षी के पर प्रविष्ट किये जाते थे; पीछे मुर्ग के पर भी बुने जाने लगे थे। कुत्ते की रोएँदार खाल की धज्जियाँ भी चटाई के ऊपर लगाई जाती थीं। परन्तु ये चटाइयाँ मकानों पर छप्पर की तरह डालने के काम आती थीं।

मावरियों की पोशाक अधिकतर दो चटाइयों से बन जाती थी। एक चटाई कमर म बाँध ली जाती थी और दूसरी लबादे की तरह पहन ली जाती थी।

परिच्छादन

स्त्रियों की पोशाक भी ऐसी ही होती थी। केवल इतना प्रभेद होता था कि गले में जो चटाई बाँधी जाती थी वह पुरुषों में दाहिने कंधे पर और स्त्रियों में बाँए कंधे पर बाँधी जाती थी। बालक और बालिकाएँ आठ वर्ष की वयस तक बिल्कुल नग्न रहते थे।

स्त्रियों के केश खूब लम्बे बढ़ने दिये जाते थे। बालिका माथे पर के बाल भौंह की बराबर से कटवा दिया करती थीं। कुलीन स्त्रियाँ बालों में

शृंगार

'हूमा' पक्षी के दो पर लगा लिया करती थीं। ये पर बड़े मूल्यवान समझे जाते थे और लकड़ी के बढ़िया बने हुए छोटे छोटे बक्सों में सुरक्षित रखे जाते थे।

कान भी छिदवाये जाते थे और उनसें अनेक प्रकार के गहने पहने जाते थे। कान का गहना एक विशेष प्रकार के अत्यन्त कठोर पत्थर का होता था और उसके

खाद्य भण्डार.

बनाने में बहुत समय लगता था। न्यू ज़ीलैण्ड में यूरोपियनों के पहुँचने के पूर्व वहाँ के निवासियों के पास किसी भी प्रकार की धातु नहीं थी, अतएव गहने केवल शार्क मछली के दाँतों, फूलों, परों इत्यादि के बनाये जाते थे। पर इसके

भोजन बनाना स्त्रियों ही का कार्य समझा जाता रहा। मावरियों के खाद्य पदार्थ मछली तथा शाक भाजी रहे हैं। मांस को तो ये लोग बड़ी न्यामत समझते थे। कुत्ते का मांस तथा चूहा ये लोग बड़ी रुचि से खाते थे। कप्तान कुक जब न्यू ज़ीलैण्ड पहुँचे तब उन्होंने सुअर और बकरे का मांस मावरियों को खिलाया। मावरियों ने सुअर का मांस बहुत पसन्द किया था। अनेक प्रकार के पक्षी भी इनके भोज्य पदार्थ हैं। कुछ पक्षियों को ये लोग नहीं खाते थे; क्योंकि इन लोगों को विश्वास था कि उनमें पुरुखाओं की आत्मा का निवास है। शाक में ये लोग एक विशेष प्रकार के पौधे की जड़ खाते थे। मीठे आलू तथा अनेक प्रकार के फल भी खाते थे। ये लोग पौधे में खाने योग्य बस्तु केवल उसकी जड़ ही समझते थे। विशप मार्सडन नामक एक मिशनरी का कथन है कि पौधों की जड़ खाने के ये लोग इतने अभ्यस्थ हो गये थे कि जब पहले पहल इन लोगों से अनाज की खेती कराई गई तो फसल पकने की प्रतीक्षा से ये लोग ऊब गये और अनाज के हरे पौधों को उखाड़ कर उनकी जड़ में अनाज खोजने लगे। भोजन भी ये लोग इस प्रकार पकाते थे कि एक गड्ढा खोदकर उसमें लकड़ियाँ भर देते थे और उन्हें सुलगा देते थे। लकड़ियाँ सुलग जाने पर उनमें पत्थर छोड़ देते थे। जब पत्थर खूब गरम हो जाते थे और आग बुझ जाती थी तो गड्ढे में से राख और कोयले निकाल कर और पत्थरों पर पत्तियाँ बिछा कर उनपर पानी छिड़क देते थे। तत्पश्चात् पत्तियों में लपटे हुये खाद्य पदार्थ पत्तियों में रखकर ऊपर से पुनः पानी छिड़की हुई पत्तियों से ढक देते थे। इसके ऊपर चटाई इत्यादि डालकर मट्टी से ढक देते थे।

भोजन

ये लोग खाद्य पदार्थ टोकरियों में रखकर भोजन करते थे। स्त्रियाँ पुरुषों से अलग और गुलाम लोग स्वामियों से अलग बैठकर भोजन करते थे। मेहमानों की उपस्थिति होने पर मेहमान लोग अलग भोजन करते थे। गृह स्वामी का मेहमानों के साथ भोजन करना शिष्टाचार के विरुद्ध समझा जाता था।